

سُورَةِ التُّوْبَة - ۹

سُورَةِ التُّوْبَة

سُورَةِ التُّوْبَة के संक्षिप्त विषय

यह سُورَةِ التُّوْبَة में 129 आयतें हैं।

इस सुरह में तौबा की शुभ सूचना तथा वचन भंगी काफिरों से विरक्त होने की घोषणा है। इसलिये इस का नाम सُورह तौबा और बराआ (विरक्त) दोनों हैं।

- यह सन् (8-9) हिज्री के बीच मक्का की विजय के पश्चात् नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर समय-समय से उतरी। और सन् (9) हिज्री में जब आप ने अबू बक्र (रजियल्लाहु अन्हु) को हज्ज का अमीर बना कर भेजा तो इस की आरंभिक आयतें उतरी। और यह एलान किया गया कि काफिरों से संधि तोड़ दी गई और अहले किताब से संबंधित इस्लामी शासन की नीति बताते हुये उन्हें सावधान किया गया।
- इस में इस्लामी वर्ष और महीने का पालन करने का निर्देश दिया गया।
- तबूक के युद्ध के लिये मुसलमानों को उभारा गया तथा मुनाफिकों की निन्दा की गई जो जिहाद से जी चुराते थे।
- यह बताया गया कि ज़कात किन को दी जायें। और ईमान वालों को सफल होने की शुभ सूचना दी गई।
- मुनाफिकों के साथ जिहाद करने का आदेश दिया गया। और उन्हें सुधर जाने और अल्लाह तथा रसूل (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की आज्ञा का पालन करने को कहा गया अन्यथा वह अपने ईमान के दावे में झूठे हैं।
- नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के सच्चे साथियों को शुभ सूचना देने के साथ ग्रामीण वासियों को उन के निफाक पर धर्मकी दी गई।
- जिहाद से जी चुराने वालों के झूठ को उजागर किया गया और ईमान वालों के दोष क्षमा करने का एलान किया गया।
- मुनाफिकों के मस्जिद बना कर षड्यंत्र रचने का भंडा फोड़ने के साथ मुशर्रिकों के लिये क्षमा की प्रार्थना करने से रोक दिया गया। और मदीना के आस-पास के ग्रामिणों को नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के लिये जान दे देने तथा धर्म के समझने के निर्देश दिये गये।

- ईमान वालों को जिहाद का निर्देश और मुनाफिकों को अन्तिम चेतावनी दी गई।
- अन्त में कहा गया कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम्हारी केवल भलाई चाहते हैं। इसलिये यदि तुम उन का आदर करोगे तो तुम्हारा ही भला होगा।

1. अल्लाह तथा उस के रसूल की ओर से संधि मक्त होने की घोषणा है उन मिश्रणवादियों के लिये जिन से तुम ने संधि (समझौता) किया^[1] था।
2. तो (हे काफिरो!) तुम धरती में चार महीने (स्वतंत्र हो कर) फिरो। तथा जान लो कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकोगे। और निश्चय अल्लाह, काफिरों को अपमानित करने वाला है।
3. तथा अल्लाह और उस के रसूल की ओर से सार्वजनिक सूचना है, महा हज्ज^[2] के दिन कि अल्लाह मिश्रणवादियों से अलग है। तथा उस का रसूल भी। फिर यदि तुम तौबा (क्षमा याचना) कर लो तो वह तुम्हारे लिये उत्तम है। और यदि तुम ने मुँह फेरा तो जान लो कि

بِرَأْءَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى الَّذِينَ عَاهَدُوا مِنْ أَنفُسِهِمْ فَمِنْهُمْ مُّجْرِيُّ الْكُفَّارِ
الْمُشْرِكُونَ

فَسِيُّحُوا فِي الْأَرْضِ لِرَبِيعَةَ أَشْهُرٍ وَاعْلَمُوا أَنَّهُمْ غَيْرُ
مُّجْرِيِ اللَّهِ وَإِنَّ اللَّهَ مُغْرِيُ الْكُفَّارِ ۝

وَإِذَا نُّنَذَّلُ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحِجَةِ
الْأَكْبَرِ إِنَّ اللَّهَ يَرَى مِنَ الْمُشْرِكِينَ ذُو رَسُولِهِ
فَإِنْ شَاءُوا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهُمْ دَلَانٌ تَوْبَيْلٌ فَاعْلَمُوا
أَنَّكُمْ غَيْرُ مُجْرِيِ اللَّهِ وَمَبْيَرُ الَّذِينَ كَفَرُوا
بِعَذَابِ الْيَوْمِ ۝

1. यह सूरह सन् 9 हिज्री में उतरी। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना पहुँचे तो आप ने अनेक जातियों से समझौता किया था। परन्तु सभी ने समय समय से समझौते का उल्लंघन किया। लेकिन आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) बराबर उस का पालन करते रहे। और अब यह घोषणा कर दी गई कि मिश्रणवादियों से कोई समझौता नहीं रहेगा।

2. यह एलान ज़िल हिज्जा सन् (10) हिज्री को मिना में किया गया। कि अब काफिरों से कोई संधि नहीं रहेगी। इस वर्ष के बाद कोई मुशर्रिक हज्ज नहीं करेगा और न कोई कँवा का नंगा तवाफ करेगा। (बुखारी- 4655)

तुम अल्लाह को विवश करने वाले
नहीं हो। और आप उन्हें जो काफिर
हो गये दुखदायी यातना का शुभ
समाचार सुना दें।

4. सिवाय उन मुशरिकों के जिन से तुम
ने संधि की, फिर उन्होंने तुम्हारे
साथ कोई कमी नहीं की, और न
तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता
की, तो उन से उन की संधि उन की
अवधि तक पूरी करो। निश्चय अल्लाह
आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।
5. अतः जब सम्मानित महीने बीत जायें
तो मिश्रणवादियों का बध करो उन्हें
जहाँ पाओ, और उन्हें पकड़ो, और
धेरो^[1], और उन की घात में रहो।
फिर यदि वह तौबा कर लें और
नमाज़ की स्थापना करें तथा ज़कात
दें तो उन्हें छोड़ दो। वास्तव में
अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
6. और यदि मुशरिकों में से कोई तुम से
शरण माँगे तो उसे शरण दो यहाँ तक
कि अल्लाह की बातें सुन ले। फिर उसे
पहुँचा दो उस के शान्ति के स्थान तक।
यह इसलिये कि वह ज्ञान नहीं रखते।
7. इन मुशरिकों (मिश्रणवादियों) की
कोई संधि अल्लाह और उस के रसूल
के पास कैसे हो सकती है? उन के
सिवाय जिन से तुम ने सम्मानित
मस्जिद (कँबा) के पास संधि

إِلَّا الَّذِينَ عَاهَدُتُمْ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ثُمَّ لَمْ يَنْفَعُوكُمْ بِمَا دَعَوْتُمْ وَيُظَاهِرُوا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَلَمْ يَنْهَا
إِلَيْهِمْ عَهْدُهُمْ إِلَى مُدَّتِهِمْ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ
الْمُتَقْنِينَ ①

فَإِذَا أَسْلَكْتُمُ الْأَشْهُرَ الْحُرُمَ وَأَمْتَوْتُ الْمُشْرِكِينَ
حَيْثُ وَجَدُّتُهُمْ وَمَحْدُوْهُمْ وَاحْصُرُوهُمْ
وَاقْعُدُوهُمْ كُلَّ مَرْضَدٍ فَإِنْ تَابُوا وَأَقْامُوا
الصَّلَاةَ وَأَتَوْ الْزَكُوْةَ فَخُلُوْسِهِمْ لَهُمْ إِنَّ اللَّهَ
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ②

وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَاجْرُهُ
حَتَّى يَسْمَعَ كَلِمَتَ اللَّهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَا مَنَّهُ ذَلِكَ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْلَمُونَ ③

كَيْفَ يَكُونُ لِلْمُشْرِكِينَ عَاهَدُ عِنْدَ اللَّهِ وَعَنْدَ
رَسُولِهِ إِلَّا الَّذِينَ غَاهَدُتُمْ عِنْدَ السَّجْدَةِ
الْحَرَامِ فَمَا اسْتَقَمُوا لَكُمْ فَاسْتَقِمُوا لَهُمْ إِنَّ
اللَّهَ يُحِبُّ الْمُتَقْنِينَ ④

1 यह आदेश मक्का के मुशरिकों के बारे में दिया गया है, जो इस्लाम के विरोधी
थे और मुसलमानों पर आक्रमण कर रहे थे।

की^[1] थी। तो जब तक वह तुम्हारे लिये सीधे रहें तो तुम भी उन के लिये सीधे रहो। वास्तव में अल्लाह आज्ञाकारियों से प्रेम करता है।

8. और उन की संधि कैसे रह सकती है जब कि वह यदि तुम पर अधिकार पा जायें तो किसी संधि और किसी वचन का पालन नहीं करेंगे। वे तुम्हें अपने मुखों से प्रसन्न करते हैं, जब कि उन के दिल इन्कार करते हैं। और उन में अधिकांश वचनभंगी हैं।
9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले तनिक मूल्य खरीद लिया^[2], और (लोगों को) अल्लाह की राह (इस्लाम) से रोक दिया। वास्तव में वे बड़ा कुकर्म कर रहे हैं।
10. वह किसी ईमान वाले के बारे में किसी संधि और वचन का पालन नहीं करते। और वही उल्लंघनकारी हैं।
11. तो यदि वह (शिर्क से) तौबा कर लें और नमाज़ की स्थापना करें, और ज़कात दें तो तुम्हारे धर्म-बंधु हैं। और हम उन लोगों के लिये आयतों का वर्णन कर रहे हैं जो ज्ञान रखते हों।
12. तो यदि वह अपनी शपथें अपना वचन देने के पश्चात् तोड़ दें, और तुम्हारे धर्म की निन्दा करें तो कुफ़

كَيْفَ وَإِنْ يُظْهِرُوا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقِبُونَ فَيُنَكِّمُ إِلَّا
وَلَا ذَمَّةٌ يُرْضُونَ لَكُمْ بِأَنَّهُمْ رَوَاتِبٌ
فُلُوبُهُمْ وَأَكْثَرُهُمْ فِي سُقُونَ

إِشْرَقُوا بِأَيْتِ الْهُوَ تَمَّا قَلِيلًا فَصَدُّوْاعَنْ
سَيِّدِهِمْ لَأَنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ

لَا يَرْقِبُونَ فِي مُؤْمِنٍ إِلَّا ذَمَّةٌ وَأُولَئِكَ
هُمُ الْمُعْتَدُونَ

فَإِنْ تَأْبُوا وَاقْتَمُوا الصَّلَاةَ وَأَنُّوا الزَّكُوْةَ
فَلَا خُوايْنَكُمْ فِي الْذَّيْنِ وَنُقْضِلُ الْآيَتِ
لِقَوْمٍ فَيَعْلَمُونَ

وَإِنْ تَكُثُرُ أَيْمَانَهُمْ مِنْ بَعْدِ
عَهْدِهِمْ وَطَعْنُوا فِي دِينِكُمْ فَقَاتِلُوا

1 इस से अभिप्रेत हृदैविया की संधि है जो सन् (6) हिजरी में हुई। जिसे काफिरों ने तोड़ दिया। और यही सन् (8) हिजरी में मक्का की विजय का कारण बना।

2 अर्थात् संसारिक स्वार्थ के लिये सत्यर्म इस्लाम को नहीं माना।

के प्रमुखों से युद्ध करो। क्योंकि उन की शपथों का कोई विश्वास नहीं, ताकि वह (अत्याचार से) रुक जायें।

13. तुम उन लोगों से युद्ध क्यों नहीं करते जिन्होंने अपने बचन भंग कर दिये? तथा रसूल को निकालने का निश्चय किया? और उन्होंने ही युद्ध का आरंभ किया है। क्या तुम उन से डरते हो? तो अल्लाह अधिक योग्य है कि तुम उस से डरो, यदि तुम ईमान^[1] वाले हो।
14. उन से युद्ध करो, उन्हें अल्लाह तुम्हारे हाथों दण्ड देगा। और उन्हे अपमानित करेगा, और उन के विरुद्ध तुम्हारी सहायता करेगा। और ईमान वालों के दिलों का सब दुःख दूर कर देगा।
15. और उन के दिलों की जलन दूर कर देगा, और जिस पर चाहेगा दया कर देगा। और अल्लाह अति ज्ञानी नीतिज्ञ है।
16. क्या तुम ने समझा है कि यूँ ही छोड़ दिये जाओगे, जब कि (परीक्षा लेकर) अल्लाह ने उन्हे नहीं जाना है जिस ने तुम में से जिहाद किया? तथा अल्लाह और उस के रसूल और ईमान वालों के सिवाय किसी को भेदी मित्र नहीं बनाया। और अल्लाह उस से सूचित है जो तुम कर रहे हो।
17. मुशरिकों (मिश्रणवादियों) के लिये

1 آyatat n̄o 7 se lekar 13 tak yah bataya gaya hai ki shatrū ne nirantara sađhi ko toड़ा hai। aur tumhein yudh ke liye bađhy kar diya hai। ab un ke atyāchār aur aakraman ko rōkne ka yahi upay rह gaya hai ki un se yudh kiya jaye।

أَبْيَهُ الْكُفَّارُ لَا يَمْنَأُ لَهُمْ
لَعَلَّهُمْ يَتَّهَوُنَ^①

الْأَنْفَاتُ لَوْنَ قَوْمًا كَثُرًا إِيمَانَهُمْ
وَهُمْ بِأَخْرَاجِ الرَّسُولِ وَهُمْ بَدُؤُلُونَ
أَوْلَ مَرَّةٍ أَخْشَوْهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ أَحَقُّ أَنْ يَعْلَمَ
إِنَّمَّا نَنْهَا مُؤْمِنِينَ^②

قَاتِلُوهُمْ يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ بِأَيْدِيهِمْ وَلَا يَعْزِزُهُمْ
وَلَا يُنْصَرُكُمْ عَلَيْهِمْ وَلَا يَشْفُ صُدُورَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِينَ^③

وَيُدْهِبُ عَيْنَطْقُلُوْهُمْ وَيَتُوبُ اللَّهُ عَلَى مَنْ
يَشَاءُ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ^④

أَمْ حَبَّتْهُمْ أَنْ تُرْكُوا وَلَمْ يَأْعِلِمُ اللَّهُ الَّذِينَ
جَهَدُوا مِنْكُمْ وَلَا يَنْجِدُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَا
رَسُولِهِ وَلَا الْمُؤْمِنِينَ فَلِيَعْلَمْهُ وَاللَّهُ خَيْرٌ بِمَا
يَعْمَلُونَ^⑤

مَا كَانَ لِلنَّاسِ رَكِينٌ أَنْ يَعْمَرُوا مَسَاجِدَ اللَّهِ

योग्य नहीं है कि वह अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें, जब कि वह स्वयं अपने विरुद्ध कुफ्र (अधर्म) के साक्षी हैं। इन्हीं के कर्म व्यर्थ हो गये, और नरक में वही सदावासी होंगे।

18. वास्तव में अल्लाह की मस्जिदों को वही आबाद करता है जो अल्लाह पर और अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान लाया, तथा नमाज़ की स्थापना की, और ज़कात दी, और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरा। तो आशा है कि वही सीधी राह चलेंगे।

19. क्या तुम हाजियों को पानी पिलाने और सम्मानित मस्जिद (काँवा) की सेवा को उस के (ईमान के) बराबर समझते हो जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाया, तथा अल्लाह की राह में जिहाद किया? अल्लाह के समीप दोनों बराबर नहीं हैं। तथा अल्लाह अत्याचारियों को सुपथ नहीं दिखाता।

20. जो लोग ईमान लाये तथा हिज्रत कर गये, और अल्लाह की राह में अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, अल्लाह के यहाँ उन का बहुत बड़ा पद है। और वही सफल होने वाले हैं।

21. उन को उन का पालनहार शुभ सूचना देता है अपनी दया और प्रसन्नता की तथा ऐसे स्वर्गों की जिन में स्थायी सुख के साधन हैं।

22. जिन में वह सदावासी होंगे। वास्तव में अल्लाह के यहाँ (सत्कर्मियों के

شَهِيدُونَ عَلَى أَنفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ أَوْ لِئِكَ حَيَطَ
أَعْبَادُهُمْ وَفِي النَّارِ هُمْ خَلِدُونَ ⑤

إِنَّمَا يَعْمَلُ مُسْيِدَ اللَّهِ مَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ
وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَلَمْ يَجْنَبْ إِلَاهَهَ
فَعَنِّي لَوْلَيْكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَمِمِينَ ⑥

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَجَّاجَ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ
الْحَرَامِ كُلَّنِ امْنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَجَهَدَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَوْنَ عِنْدَ اللَّهِ وَلَلَّهُ لَا
يَهُدُى الْقَوْمُ الظَّلِيمُونَ ⑦

أَلَذِينَ امْنَوْا وَهَاجَرُوا وَجَهَدُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ أَعْظَمُ دَرَجَةً
عِنْدَ اللَّهِ وَأَلَيْكَ هُمُ الْفَائِرُونَ ⑧

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةِ مِنْهُ وَرِضْوَانِ وَجْهِ
لَهُمْ فِيهَا نَعِيْمٌ مَقِيلٌ ⑨

خَلِدُونَ فِيهَا أَبَدًا إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ⑩

लिये) बड़ा प्रतिफल है।

23. हे ईमान वालो! अपने बापों और भाईयों को अपना सहायक न बनाओ, यदि वह ईमान की अपेक्षा कुफ्र से प्रेम करें और तुम में से जो उन को सहायक बनायेंगे तो वही अत्याचारी होंगे।
24. हे नबी! कह दो कि यदि तुम्हारे बाप और तुम्हारे पुत्र तथा तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ तथा तुम्हारा परिवार और तुम्हारा धन जो तुम ने कमाया है, और जिस व्यापार के मंद हो जाने का तुम्हें भय है, तथा वह घर जिन से मोह रखते हो, तुम्हें अल्लाह तथा उस के रसूल और अल्लाह की राह में जिहाद करने से अधिक प्रिय है तो प्रतिक्षा करो, यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ जाये। और अल्लाह उल्लंघनकारियों को सुपथ नहीं दिखाता।
25. अल्लाह बहुत से स्थानों पर तथा हुनैन^[1] के दिन तुम्हारी सहायता कर चुका है, जब तुम को तुम्हारी अधिकता पर गर्व था, तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, तथा तुम पर

يَا يَاهُ الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا إِلَيْهِمْ كُلُّمْ وَإِخْرَانَكُمْ أَوْ لِيَأْمَنُوكُمْ إِنَّ إِنْتُمْ عَلَى الْكُفَّارِ عَلَى إِلَيْهِمْ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢﴾

فَلْ إِنْ كَانَ أَبَا ذُكْرُونَ وَاهْنَاكُمْ وَإِخْرَانَكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالُ إِقْرَانِكُمْ هَا وَبِجَارَةٍ تَخْشُونَ كَسَادَهَا وَمَسِكُنَ رَضْمُونَهَا أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجَهَادٍ فِي سَبِيلِهِ فَرِصْدُوا حَتَّى يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذَا أَعْجَبَتْكُمُ الْجُنُودُ فَلَمَّا تَغْنَ عَنْهُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحِبَتْ لَهُ وَلَيْلَهُ مُدْبِرُونَ

1 «हुनैन» मबका तथा ताइफ़ के बीच एक बादी है। वही पर यह युद्ध सन् 8 हिज्री में मक्का की विजय के पश्चात् हुआ। आप को मक्का में यह सूचना मिली कि हवाज़िन और सकीफ़ कबीले मबका पर आक्रमण करने की तय्यारियाँ कर रहे हैं। जिस पर आप बारह हज़ार की सेना लेकर निकले। जब कि शत्रु की संख्या केवल चार हज़ार थी। फिर भी उन्होंने अपने तीरों से मुसलमानों का मुँह फेर दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के कुछ साथी रणक्षेत्र में रह गये, अन्ततः फिर इस्लामी सेना ने व्यवस्थित हो कर विजय प्राप्त की। (इब्ने कसीर)

धरती अपने विस्तार के होते संकीर्ण (तंग) हो गई, फिर तुम पीठ दिखा कर भागे।

26. फिर अल्लाह ने अपने रसूल और ईमान वालों पर शान्ति उतारी। तथा ऐसी सेनायें उतारी जिन्हें तुम ने नहीं देखा^[1], और काफिरों को यातना दी। और यही काफिरों का प्रतिकार (बदला) है।
27. फिर अल्लाह इस के पश्चात् जिसे चाहे क्षमा कर दे^[2] और अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।
28. हे ईमान वालो! मुशरिक (मिश्रणवादी) मलीन है। अतः इस वर्ष^[3] के पश्चात् वह सम्मानित मस्जिद (कबा) के समीप भी न आयें। और यदि तुम्हें निर्धनता का भय^[4] हो तो अल्लाह तुम्हें अपनी दया से धनी कर देगा, यदि वह चाहे। वास्तव में अल्लाह सर्वज्ञ तत्त्वज्ञ है।
29. (हे ईमान वालो!) उन से युद्ध करो जो न तो अल्लाह पर (सत्य) ईमान लाते और न अन्तिम दिन (प्रलय) पर। और न जिसे अल्लाह और उस के

نَزَّلَ اللَّهُ سِكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لِّمَرْرَوْهَا، وَعَدَ بِ
الَّذِينَ كَفَرُوا وَذَلِكَ حَرَاءُ الْكُفَّارِ

ثُرَيَّبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَلَى مَنْ
يَشَاءُ وَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ^①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ اسْتُوْلَيْتُمُ الْمُشْرِكُونَ بِمَنْ
فَلَمْ يَقْرَأُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَلَمِهِمْ
هَذَا إِذَا أَنْ خَفَّمْ عَلَيْهِمْ فَسُوفَ يُغَنِّيَكُمُ اللَّهُ
مِنْ قَصْلِهِ إِنْ شَاءَ رَبُّكُمْ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ^②

قَاتُلُوا الَّذِينَ لَا يُمْنِونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَلَا يُحِرِّمُونَ مَا حَرَمَ اللَّهُ
وَرَسُولُهُ وَلَا يَدْعُونَ دِينَ الْحَقِّ مِنْ

1 अर्थात् फरिश्ते भी उतारे गये जो मुसलमानों के साथ मिल कर काफिरों से जिहाद कर रहे थे। जिन के कारण मुसलमान विजयी हुये और काफिरों को बंदी बना लिया गया जिन को बाद में मुक्त कर दिया गया।

2 अर्थात् उस के सत्धर्म इस्लाम को स्वीकार कर लेने के कारण।

3 अर्थात् सन् ۹ हिज्री के पश्चात्।

4 अर्थात् उन से व्यापार न करने के कारण। अपवित्र होने का अर्थ शिर्क के कारण मन की मलीनता है। (इन्हे कसीर)

रसूल ने हराम (वर्जित) किया है उसे हराम (वर्जित) समझते हैं, न सत्धर्म को अपना धर्म बनाते, उन में से जो पुस्तक दिये गये हैं यहाँ तक कि वह अपने हाथ से जिज्या^[1] दें और वह अपमानित हो कर रहें।

30. तथा यहूद ने कहा कि उजैर अल्लाह का पुत्र है। और नसारा (ईसाईयों) ने कहा कि मसीह अल्लाह का पुत्र है। यह उन के अपने मुँह की बातें हैं। वह उन के जैसी बातें कर रहे हैं जो इन से पहले काफिर हो गये। उन पर अल्लाह की मार! वह कहाँ बहके जा रहे हैं।
31. उन्हों ने अपने विद्वानों और धर्मचारियों (संतों) को अल्लाह के सिवा पूज्य^[2] बना लिया। तथा मरयम के पुत्र मसीह को, जब कि उन्हें जो आदेश दिया गया था, इस के सिवा कुछ न था कि एक अल्लाह की इबादत (वंदना) करें। कोई पूज्य नहीं है परन्तु वही। वह उस से पवित्र है जिसे उस का साझी बना रहे हैं।
32. वे चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को अपनी फूँकों से बुझा^[3] दें। और अल्लाह

الَّذِينَ أَوْتُوا الْكِتَابَ حَتَّىٰ يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ تَبَدِّلٍ وَهُمْ مُلْفَرُونَ

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عَزِيزُ لَنَا اللَّهُ وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللَّهِ ذَلِكَ قَوْلُهُمْ يَا أَفَوَاهُمْ يُضَاهِئُونَ قَوْلَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ قَبْلِ فَأَتَاهُمُ اللَّهُ أَعْلَمُ يُؤْفَكُونَ

إِنَّهُمْ دُونَنَا هُمْ وَرُهْبَانُهُمْ أَرْبَابُهُمْ مِنْ دُونِنَا اللَّهُ وَالْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ وَمَا أُمْرُنَا إِلَّا لِيَعْبُدُنَا إِلَهًا وَاحِدًا لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ مُسْبِحُهُ عَمَّا يُشْرِكُونَ

يُرِيدُونَ أَنْ يُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ يَا أَفَوَاهُمْ

1. जिज्या अर्थात् रक्षा करा जो उस रक्षा का बदला है जो इस्लामी देश में बसे हुये अहले किताब से इसलिये लिया जाता है ताकि वह यह सोचें कि अल्लाह के लिये ज़कात न देने और गुमराही पर अड़े रहने का मूल्य चुकाना कितना बड़ा दुर्भाग्य है जिस में वह फँसे हुये हैं।

2. हदीस में है कि उन के बनाये हुये वैध तथा अवैध को मानना ही उन को पूज्य बनाना है। (तिर्मिज़ी - 2471- यह सहीह हदीस है।)

3. आयत का अर्थ यह है कि यहूदी, ईसाई तथा काफिर स्वयं तो कुपथ हैं ही वह

अपने प्रकाश को पूरा किये बिना नहीं रहेगा, यद्यपि काफिरों को बुरा लगे।

33. उसी ने अपने रसूल^[1] को मार्गदर्शन तथा सत्धर्म (इस्लाम) के साथ भेजा है ताकि उसे प्रत्येक धर्म पर प्रभुत्व प्रदान कर दे^[2], यद्यपि मिश्रणवादियों को बुरा लगे।

34. हे ईमान वालो! बहुत से (अहले किताब के) विद्वान तथा धर्मचारी (संत) लोगों का धन अवैध खाते हैं और (उन्हें) अल्लाह की राह से रोकते हैं, तथा जो सोना-चाँदी एकत्र कर के रखते हैं और उसे अल्लाह की राह में दान नहीं करते, उन्हें दुःखदायी यातना की शुभसूचना सुना दौं।

35. जिस (प्रलय के) दिन उसे नरक की अग्नि में तपाया जायेगा, फिर उस से उन के माथों तथा पाँवों (पहलू) और पीठों को दागा जायेगा (और कहा जायेगा) यही है, जिसे तुम एकत्र कर रहे थे, तो (अब) अपने सचित किये धनों का स्वाद चखो।

36. वास्तव में महीनों की संख्या बारह महीने है अल्लाह के लेख में जिस दिन से उसने आकाशों तथा धरती

सत्धर्म इस्लाम से रोकने के लिये भी धोखा-धड़ी से काम लेते हैं जिस में वह कदापि सफल नहीं होंगे।

1 रसूल से अभिप्रेत मुहम्मद सल्ललाहु अलैहि व सल्लम है।

2 इस का सब से बड़ा प्रमाण यह है कि इस समय पूरे संसार में मुसलमानों की संख्या लगभग दो अरब है। और अब भी इस्लाम पूरी दुनिया में तेज़ी से फैलता जा रहा है।

وَيَأْبَى اللَّهُ إِلَّا أَنْ يُتَمَّمَ ثُورَةً وَلَوْكَرَةً
الْكُفَّارُونَ

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينٍ
الْحَقِّ لِيُظَهِّرَهُ عَلَى الَّذِينَ كُفَّارٌ وَلَوْكَرَةً
الْمُشْرِكُونَ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْجَاهِلِينَ
وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُونَ أَمْوَالَ النَّاسِ
بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
وَالَّذِينَ يَكْرِزُونَ الدَّهَبَ وَالْفَضَّةَ وَلَا
يُنْفَعُونَهَا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَبَشِّرُهُمْ بِعَذَابٍ
كَلِيمٌ

يَوْمَ يُحْسَنُ عَلَيْهِمْ فِي نَارِ جَهَنَّمَ فَتَكُونُونَ بِهَا
جَنَاحُهُمْ وَجَنُوبُهُمْ وَظَهُورُهُمْ هُنَّ أَمَّا
كُنْزُتُهُ لِأَنفُسِكُمْ فَذُو قُوَّاتِكُمْ تَكْرِزُونَ

إِنَّ عِدَّةَ الشَّهُورِ عِنْدَ اللَّهِ اثْنَا عَشَرَ
شَهْرًا فِي كِتَابِ اللَّهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ

की रचना की है। उन में से चार हराम (सम्मानित)^[1] महीने हैं। यही सीधा धर्म है। अतः अपने प्राणों पर अत्याचार^[2] न करो तथा मिश्रणवादियों से सब मिलकर युद्ध करो। जैसे वह तुम से मिल कर युद्ध करते हैं, और विश्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।

37. नसी^[3] (महीनों को आगे पीछे करना) कुफ्र (अधर्म) में अधिकता है। इस से काफिर कुपथ किये जाते हैं। एक ही महीने को एक वर्ष हलाल (वैध) कर देते हैं, तथा उसी को दूसरे वर्ष हराम (अवैध) कर देते हैं। ताकि अल्लाह ने सम्मानित महीनों की जो गिनती निश्चित कर दी है उसे अपनी गिनती के अनुसार करके अवैध महीनों को वैध कर लें। उन के लिये उन के कुर्कर्म सुन्दर बना दिये गये हैं। और अल्लाह काफिरों को सुपथ नहीं दर्शाता।

38. हे ईमान वालो! तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुम से कहा जाये कि अल्लाह की राह में निकलो तो धरती के बोझ बन जाते हो, क्या तुम आखिरत

1. जिन में युद्ध निषेध है। और वह जुलकादा, जुल हिज्जा, मुहर्रम तथा रजब के अर्बी महीने हैं। (बुखारी- 4662)

2. अर्थात् इन में युद्ध तथा रक्तपात न करो, इन का आदर करो।

3. इस्लाम से पहले मक्का के मिश्रणवादी अपने स्वार्थ के लिये सम्मानित महीनों साधारणतः मुहर्रम के महीने को स़फ़र के महीने से बदल कर युद्ध कर लेते थे। इसी प्रकार प्रत्येक तीन वर्ष पर एक महीना अधिक कर लिया जाता था ताकि चाँद का वर्ष सूर्य के वर्ष के अनुसार रहे। कुर्�आन ने इस कुरीति का खण्डन किया है, और इसे अधर्म कहा है। (इब्ने कसीर)

وَالْأَرْضَ مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرْمٌ ذَلِكَ
الَّذِينَ الْقَيْمُونَ فَلَا تَنْظِلُمُوا فِيهِنَّ
أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الشَّرِكِينَ كَافَةً
كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَافَةً وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ
مَعَ الْمُتَّقِينَ ⑥

إِنَّمَا النِّسَقُ زِيَادَةً فِي الْكُفَّارِ يُضَلُّ بِهِ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَيْهِنَّ عَالِمًا وَمُحِمَّدُوهُنَّ عَالِمًا
لَيُوَاطِّنُوا عِدَّةً مَا حَرَمَ اللَّهُ فَيُحِلُّوْا مَا حَرَمَ
اللَّهُ زِينَ لَهُمْ سُوءٌ أَعْمَالِهِمْ وَاللَّهُ لَا يَهُدِي
الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ امْتَنُوا مَا الْكُفُّارُ إِذَا قُتِلُوا لَمْ أُنْفِرُوا
فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَثَابَنَاهُمْ إِلَى الْأَرْضِ أَرْفَيْنَاهُمْ
بِالْحَيَاةِ الْدُّنْيَا مِنَ الْأُخْرَى فَهَمَا كَانُوا فِي الْجَهَنَّمِ الْأَنْجَى

(परलोक) की अपेक्षा संसारिक
जीवन से प्रसन्न हो गये हो? जब कि
परलोक की अपेक्षा संसारिक जीवन
के लाभ बहुत थोड़े हैं।^[1]

فِي الْآخِرَةِ لَا أَقِيلُونَ

¹ यह आयतें तबूक के युद्ध से संबन्धित हैं। तबूक मदीने और शाम के बीच एक स्थान का नाम है। जो मदीने से 610 कि.मी. दूर है।

सन् 9 हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह सूचना मिली कि रोम के राजा कैसर ने मदीने पर आक्रमण करने का आदेश दिया है। यह मुसलमानों के लिये अरब से बाहर एक बड़ी शक्ति से युद्ध करने का प्रथम अव्सर था। अतः आप ने तय्यारी और कूच का एलान कर दिया। यह बड़ा भीषण समय था, इस लिये मुसलमानों को प्रेरणा दी जा रही है कि इस युद्ध के लिये निकलें।

तबूक का युद्ध मक्का की विजय के पश्चात् ऐसे समाचार मिलने लगे कि रोम का राजा कैसर मुसलमानों पर आक्रमण करने की तय्यारी कर रहा है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब यह सुना तो आप ने भी मुसलमानों को तय्यारी का आदेश दे दिया। उस समय स्थिति बड़ी गंभीर थी। मदीना में अकाल था। कड़ी धूप तथा खजूरों के पकने का समय था। सवारी तथा यात्रा के संसाधन की कमी थी। मदीना के मुनाफिक अब आमिर राहिब के द्वारा ग़स्सान के ईसाई राजा और कैसर से मिले हुये थे। उन्होंने मदीना के पास अपने षड्यंत्र के लिये एक मस्जिद भी बना ली थी। और चाहते थे कि मुसलमान पराजित हो जायें। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों का उपहास करते थे। और तबूक की यात्रा के बीच आप पर प्राण घातक आक्रमण भी किया। और बहुत से द्विधावादियों ने आप का साथ भी नहीं दिया और झूठे बहाने बना लिये। रजब सन् 9 हिजरी में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीस हज़ार मुसलमानों के साथ निकले। इन में दस हज़ार सवार थे। तबूक पहुँच कर पता लगा कि कैसर और उस के सहयोगियों ने साहस खो दिया है। क्योंकि इस से पहले मूता के रण में तीन हज़ार मुसलमानों ने एक लाख ईसाईयों का मुकाबला किया था। इसलिये कैसर तीस हज़ार की सेना से भिड़ने का साहस न कर सका। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तबूक में बीस दिन रह कर रोमियों के आधीन इस क्षेत्र के राज्यों को अपने आधीन बनाया। जिस से इस्लामी राज्य की सीमायें रोमी राज्य की सीमा तक पहुँच गईं। जब आप मदीना पहुँचे तो द्विधावादियों ने झूठे बहाने बना कर क्षमा माँग ली। तीन मुसलमान जो आप के साथ आलस्य के कारण नहीं जा सके थे और अपना दोष स्वीकार कर लिया था आप ने उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। किन्तु अल्लाह ने उन तीनों को भी उन के सत्य के कारण क्षमा कर दिया। आप ने उस मस्जिद को भी गिराने का आदेश दिया जिसे मुनाफिकों ने अपने षड्यंत्र का केन्द्र बनाया था।

39. यदि तुम नहीं निकलोगे, तो तुम्हें
अल्लाह दुखदायी यातना देगा, तथा
तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को
लायेगा। और तुम उसे कोई हानि
नहीं पहुँचा सकोगे। और अल्लाह जो
चाहे कर सकता है।

40. यदि तुम उस (नबी) की सहायता
नहीं करोगे तो अल्लाह ने उस की
सहायता उस समय^[1] की है जब
काफिरों ने उसे (मक्का से) निकाल
दिया। वह दो में दूसरे थे। जब दोनों
गुफा में थे, जब वह अपने साथी से
कह रहे थे: उदासीन न हो, निश्चय
अल्लाह हमारे साथ है।^[2] तो अल्लाह ने
अपनी ओर से शान्ति उतार दी, और
आप को ऐसी सेना से समर्थन दिया
जिसे तुम ने नहीं देखा। और काफिरों
की बात नीची कर दी। और अल्लाह
की बात ही ऊँची रही। और अल्लाह
प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

41. हल्के^[3] होकर और बोझल (जैसे हो)

إِلَّا تُنْفِرُوا إِعْدَادًا كَمَا أَنْبَأَنَا إِلَيْكُمْ وَرَبُّكُمْ
قَوْمًا لَغَيْرِكُمْ وَلَا يَنْصُرُوهُ شَيْئًا مَا وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ^④

إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَ اللَّهُ إِذَا أَخْرَجَ الَّذِينَ
كَفَرُوا ثَلَاثَةِ أَنْتَيْنَ إِذْ هُمْ بِأَنْفُسِهِمْ أَكْبَرُ
يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزُنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا
فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْنَا وَأَيَّدَنَا بِجُنُودِهِ
تَرَوْهَا وَجَعَلَ كُلَّمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ وَكُلَّمَةُ
اللَّهِ هِيَ الْعُلِيَّا مَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ^⑤

إِنْفِرُوا إِخْنَافًا وَيَقْنَالًا وَجَاهِهِمُوا بِأَمْوَالِهِمْ

1 यह उस अवसर की चर्चा है जब मक्का के मिश्रणवादियों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बध कर देने का निर्णय किया। उसी रात आप मक्का से निकल कर सौर पर्वत नामक गुफा में तीन दिन तक छुपे रहे। फिर मदीना पहुँचे। उस समय गुफा में केवल आदरणीय अबू बक्र सिद्दीक रजियल्लाहु अन्हु आप के साथ थे।

2 हदीस में है कि अबू बक्र (रजियल्लाहु अन्हु) ने कहा कि मैं गुफा में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के साथ था। और मैं ने मुशरिकों के पैर देख लिये। और आप से कहा: यदि इन में से कोई अपना पैर उठा दे तो हमें देख लेगा। आप ने कहा: उन दो के बारे में तुम्हारा क्या विचार है जिन का तीसरा अल्लाह है। (सहीह बुखारी- 4663)

3 संसाधन हो या न हो।

निकल पड़ो। और अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में जिहाद करो। यही तुम्हारे लिये उत्तम है, यदि तुम ज्ञान रखते हो।

42. (हे नबी!) यदि लाभ समीप और यात्रा सरल होती तो यह (मुनाफिक) अवश्य आप के साथ हो जाते। परन्तु उन को मार्ग दूर लगा, और (अब) अल्लाह की शपथ लेंगे कि यदि हम निकल सकते, तो अवश्य तुम्हारे साथ निकल पड़ते, वह अपना विनाश स्वयं कर रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि वे वास्तव में झूठे हैं।

43. (हे नबी!) अल्लाह आप को क्षमा करे। आप ने उन्हें अनुमति क्यों दी? यहाँ तक कि आप के लिये जो सच्चे हैं उजागर हो जाते, और झूठों को जान लेते।

44. आप से (पीछे रह जाने की) अनुमति वह नहीं माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिन (प्रलय) पर ईमान रखते हों कि अपने धनों तथा प्राणों से जिहाद करेंगे। और अल्लाह आज्ञाकारियों को भली भाँती जानता है।

45. आप से अनुमति वही माँग रहे हैं जो अल्लाह तथा अन्तिम दिवस (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, और अपने सदेह में पड़े हुये हैं।

46. यदि वे निकलना चाहते तो अवश्य उस के लिये कुछ तय्यारी करते। परन्तु अल्लाह को उन का जाना

وَأَنْفِسُكُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لِّكُمْ
كُلُّنَا مُتَعَلِّمُونَ ⑩

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيبًا وَسَقَرًا قَاصِدًا
لَا تَبْغُوهُ وَلَكُنْ بَعْدَتْ عَلَيْهِمُ الشَّفَةُ
وَسَيَحْلِفُونَ يَاللَّهِ لَوْ أَسْتَطَعْنَا الْعَرْجَنَا
مَعَكُمْ يَهْلِكُونَ أَنْسَهُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
إِنَّهُمْ لَكُلُّنَّ بُونَ ⑪

عَنَّا اللَّهُ عَنْكَ لِرَأْذِنَتْ لَهُمْ حَثِّي
يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِينَ مَدَّوْفُوا وَلَعَلَّمَ
الْكَلِّيْنِ ⑫

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ يَاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ أَنْ يُجَاهِدُوا يَأْمُوْلِهِمْ
وَأَنْفِسِهِمْ وَاللَّهُ عَلَيْهِ يَالْمُتَّقِيْنَ ⑬

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ يَاللَّهِ
وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوبُهُمْ فَهُمْ
رَيْبِهِمْ يَرْدُدُونَ ⑭

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوجَ لَا عَدُوَّ لَهُ عَدَّةٌ
وَلَكُنْ كَثِيرًا اللَّهُ أَنْبَاعَهُمْ فَيَقْطَعُهُمْ

अप्रिय था, अतः उन्हें आलसी बना दिया। तथा कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो।

47. और यदि वह तुम में निकलते तो तुम में बिगाड़ ही अधिक करते। और तुम्हारे बीच उपद्रव के लिये दौड़ धूप करते। और तुम में वह भी है जो उन की बातों पर ध्यान देते हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को भली भाँती जानता है।
48. (हे नबी!) वह इस से पहले भी उपद्रव का प्रयास कर चुके हैं, तथा आप के लिये बातों में हेर फेर कर चुके हैं। यहाँ तक कि सत्य आ गया, और अल्लाह का आदेश प्रभुत्वशाली हो गया, और यह बात उन्हें अप्रिय है।
49. उन में से कोई ऐसा भी है जो कहता है: आप मुझे अनुमति दे दें। और परीक्षा में न डालो। सुन लो! परीक्षा में तो यह पहले ही से पड़े हुए हैं। और वास्तव में नरक काफिरों को घेरी हुयी है।
50. (हे नबी!) यदि आप का कछु भला होता है तो उन (द्विधावादियों) को बुरा लगता है। और यदि आप पर कोई आपदा आ पड़े तो कहते हैं: हम ने पहले ही अपनी सावधानी बरत ली थी। और प्रसन्न होकर फिर जाते हैं।
51. आप कह दें: हमें कदापि कोई आपदा नहीं पहुँचेगी परन्तु वही जो अल्लाह ने हमारे भाग्य में लिख दी है। वही हमारा सहायक है। और अल्लाह ही पर

وَقِيلَ أَقْعُدُ وَأَمَّةَ الْقَعْدَيْنَ ④

لَوْخَرْجُوا فِيْكُمْ مَا نَزَّلْنَا عَلَيْكُمْ إِلَّا
خَبَالَأَوْلَادِ أَوْ ضَعْوًا خَلَلَكُمْ
يَبْغُونَكُمُ الْفِتْنَةَ وَفِيْكُمْ
سَمْعُونَ لَهُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ⑤

لَقَدْ أَبْشَعُوا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلِ وَقْبَلُوكَ
الْأَمْوَارِ حَتَّى جَاءَ الْحُقُوقُ وَظَهَرَ أَمْرُ اللَّهِ
وَهُمْ كَرِهُونَ ⑥

وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ اثْدُنْ لِي وَلَا نَفِقْتُ
إِلَّا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوا وَإِنَّ جَهَنَّمَ
لِمُجِيئَةِ الْكُفَّارِ ⑦

إِنْ تُصِيبَكَ حَسَنَةٌ سُوْفَ هُمْ وَلَنْ تُصِيبَكَ
مُصِيبَةٌ يَقُولُوا فَذَاهِدُنَا إِنَّمَا نَأْمَنُ مِنْ
قَبْلٍ وَيَتَوَلَّوْا وَهُمْ فَرِحُونَ ⑧

فُلُونْ لَنْ تُصِيبَنَا إِلَّا مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا هُوَ
مَوْلَانَا وَعَلَى اللَّهِ فَلِيَسْتَوْكِلُ
الْمُؤْمِنُونَ ⑨

ईमान वालों को निर्भर रहना चाहिये।

52. आप उन से कह दें कि तुम हमारे बारे में जिस की प्रतीक्षा कर रहे हो वह यही है कि हमें दो^[1] भलाईयों में से एक मिल जाये। और हम तुम्हारे बारे में इस की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि अल्लाह तुम्हें अपने पास से यातना देता है या हमारे हाथों से। तो तुम प्रतीक्षा करो। हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं।
53. आप (मुनाफिकों से) कह दें कि तुम स्वेच्छा दान करो अथवा अनिच्छा, तुम से कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा। क्यों कि तुम अवज्ञाकारी हो।
54. और उन के दानों के स्वीकार न किये जाने का कारण इस के सिवाय कुछ नहीं है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कृफ़ किया है। और वह नमाज़ के लिये आलसी होकर आते हैं, तथा दान भी करते हैं तो अनिच्छा करते हैं।
55. अतः आप को उन के धन तथा उनकी संतान चकित न करो। अल्लाह तो यह चाहता है कि उन्हें इन के द्वारा संसारिक जीवन में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफिर हों।
56. वह (मुनाफिक) अल्लाह की शपथ लेकर कहते हैं कि वह तुम में से है,

قُلْ هُنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجِعُونَ
الْحُسْنَيْنِ وَلَا يَعْمَلُونَ
يُصِيبُكُمُ اللَّهُ بِعَدَابٍ أَوْ
پَائِدِيَّاتٍ فَرَبِّكُمُوا إِذَا مَعَكُمْ مُتَّرَبِّصُونَ^④

قُلْ أَنْفُقُوا طَوْعًا أَوْ كُرْهًا لَمْ يُتَّقَبِّلْ مِنْكُمْ
إِنَّمَا كُنْتُمْ قَوْمًا فَيُقَنِّ^⑤

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقَتْهُمْ إِلَّا
أَنَّهُمْ كُفَّارٌ وَّأَيُّهُمْ وَرِسُولُهُ وَلَا يَأْتُونَ
الْفَلَوَةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالٍ وَلَا يُنْفِعُونَ إِلَّا
وَهُمُ كُلُّهُمُ^⑥

كَلَّا لِيَحْجِمَكُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَكُلُّهُمْ إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ
لِيَعْدِيهِمْ بِمَا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَتَرْهِقَ
أَنْفُسَهُمْ وَهُمْ كُلُّهُمْ كُفَّارُونَ^⑦

وَيَعْلَمُهُمْ بِاللَّهِ إِنَّهُمْ لَيَنْكِمُونَ مَا هُمْ مِنْكُمْ

1 दो भलाईयों से अभिप्रायः विजय या अल्लाह की राह में शहीद होना है। (इन्हे कसीर)

जब कि वह तुम में से नहीं है, परन्तु भयभीत लोग हैं।

وَلِكُلِّهِمْ قَوْمٌ يَنْهَا فُونَ ﴿٦﴾

57. यदि वह कोई शरणगार अथवा गुफा या प्रवेश स्थान पा जायें तो उस की ओर भागते हुये फिर जायेंगे।

لَوْيَجِدُوْنَ مَلْجَأً أَوْ مَغْرِبَتٍ أَوْ مَدَّخَلًا
لَوْكُوا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْسِدُوْنَ ﴿٧﴾

58. (हे नबी!) उन (मुनाफ़िकों) में से कुछ ज़कात के वितरण में आप पर आक्षेप करते हैं। फिर यदि उन्हें उस में से कुछ दे दिया जाये तो प्रसन्न हो जाते हैं, और यदि न दिया जाये तो तुरन्त अप्रसन्न हो जाते हैं।

وَمِنْهُمْ مَنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ إِنَّمَا
أَعْطُوا مِنْهَا رِضْوَانًا لَّمْ يُعْطُوا مِنْهَا لَا ذَرَّا
هُمْ يَسْخُطُوْنَ ﴿٨﴾

59. और क्या ही अच्छा होता यदि वह उस से प्रसन्न हो जाते जो उन्हें अल्लाह और उस के रसूल ने दिया है। तथा कहते कि हमारे लिये अल्लाह काफ़ी है। हमें अपने अनुग्रह से (बहुत कुछ) प्रदान करेगा, तथा उस के रसूल भी, हम तो उसी की ओर रुचि रखते हैं।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوا مَا أَنْتُمْ هُمُ اللَّهُ وَرَسُولُهُ^۷
وَقَالُوا حَسِبْنَا اللَّهُ سَيِّدُنَا اللَّهُ مَنْ فَضَّلَهُ
وَرَسُولُهُ إِنَّا إِلَى اللَّهِ وَغَيْرِهِ بَعْدُ^۸

60. ज़कात (दिय, दान) केवल फ़कीरों^[1], मिस्कीनों और कार्य- -कर्ताओं^[2] के लिये, तथा उन के लिये जिन के दिलों को जोड़ा जा रहा है^[3] और दास मुक्ति, तथा ऋणियों (की सहायता) के लिये, और अल्लाह की

إِنَّمَا الصَّدَقَاتُ لِلْفُقَرَاءِ وَالْمَسَاكِينِ وَالْعَابِدِينَ
عَلَيْهَا وَالْمَوْلَفَةِ قُلُوبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ
وَالْفَرِمَدِينَ وَفِي سَيِّدِنَا اللَّهِ وَابْنِ السَّيِّدِنَا زَيْنَ الدِّينِ
مِنَ اللَّهِ وَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ^۹

1 कुर्�आन ने यहाँ फ़कीर और मिस्कीन के शब्दों का प्रयोग किया है। फ़कीर का अर्थ है जिस के पास कुछ न हो। परन्तु मिस्कीन वह है जिस के पास कुछ धन हो मगर उस की आवश्यकता की पूर्ति न होती हो।

2 जो ज़कात के काम में लगे हों।

3 इस से अभिप्राय वह है जो नये नये इस्लाम लाये हों। तो उन के लिये भी ज़कात है। या जो इस्लाम में रुचि रखते हों, और इस्लाम के सहायक हों।

राह में तथा यात्रियों के लिये है।
अल्लाह की ओर से अनिवार्य (देय) है।^[1]
और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

61. तथा उन(मुनाफिकों) में से कछु नबी को दुःख देते हैं, और कहते हैं कि वह बड़े सुनवा^[2] हैं। आप कह दें कि वह तुम्हारी भलाई के लिये ऐसे हैं। वह अल्लाह पर ईमान रखते हैं और ईमान बालों की बात का विश्वास करते हैं, और उन के लिये दया है जो तुम में से ईमान लाये हैं। और जो अल्लाह के रसूल को दुःख देते हैं उन के लिये दुःखदायी यातना है।

62. वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की शपथ

وَمِنْهُمُ الَّذِينَ يُؤْذِنُونَ اللَّهَيْ وَيَقُولُونَ
هُوَ أَذْنُنَا فَلَمَّا خَيْرَ لَكُمْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ
وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِينَ وَرَحْمَةً لِلنَّاسِ
أَمْتُوا مِنْكُمْ وَالَّذِينَ يُؤْذِنُونَ رَسُولَ اللَّهِ
لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ^⑤

يَخْلِفُونَ بِاللَّهِ أَكْثَمْ لِيُرْضُوْكُمْ وَاللَّهُ

1 संसार में कोई धर्म ऐसा नहीं है जिस ने दीन दुखियों की सहायता और सेवा की प्रेरणा न दी हो। और उसे इबादत (बंदना) का अनिवार्य अंश न कहा हो। परन्तु इस्लाम की यह विशेषता है कि उस ने प्रत्येक धनी मुसलमान पर एक विशेष कर-निर्धारित कर दिया है जो उस पर अपनी पूरी आय का हिसाब करके प्रत्येक वर्ष देना अनिवार्य है। फिर उसे इतना महत्व दिया है कि कर्म में नमाज के पश्चात् उसी का स्थान है। और कर्मान में दोनों कर्मों की चर्चा एक साथ करके यह स्पष्ट कर दिया गया है कि किसी समुदाय में इस्लामी जीवन के सब से पहले यही दो लक्षण है। नमाज तथा ज़कात, यदि इस्लाम में ज़कात के नियम का पालन किया जाये तो समाज में कोई गरीब नहीं रह जायेगा। और धनवानों तथा निर्धनों के बीच प्रेम की ऐसी भावना पैदा हो जायेगी कि पुरा समाज सुखी और शान्तिमय बन जायेगा। ब्याज का भी निवारण हो जायेगा। तथा धन कुछ हाथों में सीमित नहीं रह कर उस का लाभ पूरे समाज को मिलेगा। फिर इस्लाम ने इस का नियम निर्धारित किया है। जिस का पूरा विवरण हीसों में मिलेगा और यह भी निश्चित कर दिया कि ज़कात का धन किन को दिया जायेगा, और इस आयत में उन्हीं की चर्चा की गई है, जो यह हैं:

1- फ़कीर, 2- मिस्कीन, 3- ज़कात के कार्यकर्ता, 4- नये मुसलमान, 5- दास-दासी, 6- कृष्णी, 7- धर्म के रक्षक, 8- और यात्री। अल्लाह की राह से अभिप्राय वह लोग हैं जो धर्म की रक्षा के लिये काम कर रहे हैं।

2 अर्थात् जो कहो मान लेते हैं।

लेते हैं, ताकि तुम्हें प्रसन्न कर लें। जब कि अल्लाह और उस के रसूल इस के अधिक योग्य हैं कि उन्हें प्रसन्न करें, यदि वह वास्तव में ईमान वाले हैं।

63. क्या वह नहीं जानते कि जो अल्लाह और उस के रसूल का विरोध करता है उस के लिये नरक की अग्नि है? जिस में वह सदावासी होंगे? और यह बहुत बड़ा अपमान है।
64. मुनाफ़िक़ (द्विधावादी) इस से डरते हैं कि उन^[1] पर कोई ऐसी सूरह न उतार दी जाये जो उन्हें इन के दिलों की दशा बता दे। आप कह दें कि हँसी उड़ा लो। निश्चय अल्लाह उसे खोल कर रहेगा जिस से तुम डर रहे हो।
65. और यदि आप^[2] उन से प्रश्न करें तो वे अवश्य कह देंगे कि हम तो यूँ ही बातें तथा उपहास कर रहे थे। आप कहिये कि क्या अल्लाह तथा उस की आयतों और उस के रसूल के ही साथ उपहास कर रहे थे?
66. तुम बहाने न बनाओ, तुम ने अपने ईमान के पश्चात् कुफ़ किया है। यदि हम तुम्हारे एक गिरोह को क्षमा कर दें तो भी एक गिरोह को अवश्य यातना देंगे। क्यों कि वही अपराधी हैं।
67. मुनाफ़िक़ पुरुष तथा स्त्रियाँ सब

وَرَسُولُهُ أَحَقُّ أَنْ يُرْضُوْهُ إِنْ كَانُوا مُؤْمِنِيْنَ ④

الْمُرْعَدُونَ أَكَّهُهُمْ مَنْ يُحَادِدُ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارًا جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا ذَلِكَ الْخَرْزُ الْعَظِيمُ ④

يَحْذِرُ الْمُنْفَعُونَ أَنْ تُرْزَلَ عَلَيْهِمْ سُورَةً تُتِّهِ هُنْ يَمْأَنُ فَلَوْ بِهِمْ قُلْ اسْتَهْزِئُوا إِنَّ اللَّهَ مُخْرِجٌ مَا يَعْذِرُونَ ④

وَلَئِنْ سَأَلْتُهُمْ لَيَقُولُنَّ إِنَّمَا كَانُوا غَوْصًّا وَنَلَعْبُ قُلْ إِنَّمَا لَهُوَ وَآتَيْتَهُ وَرَسُولَهُ كُنْثًا سَسْهَرُونَ ④

لَا عَتَّدُ رُوَافِدَ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانَكُمْ إِنْ تَعْفُ عنْ طَآفَةٍ مِّنْكُمْ تُعَذَّبُ طَآفَةٌ يَا أَنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِيْنَ ④

الْمُنْفَعُونَ وَالْمُنْفَقُوتُ بَعْضُهُمْ مِّنْ بَعْضٍ

1 ईमान वालों पर।

2 तबूक की यात्रा के बीच मुनाफ़िक़ लोग, नबी तथा इस्लाम के विरुद्ध बहुत सी दुश्खदायी बात कर रहे थे।

एक-दूसरे जैसे हैं। वह बुराई का आदेश देते तथा भलाई से रोकते हैं। और अपने हाथ बंद किये रहते^[1] हैं। वे अल्लाह को भूल गये, तो अल्लाह ने भी उन्हें भुला^[2] दिया। वास्तव में मुनाफ़िक ही भ्रष्टाचारी हैं।

68. अल्लाह ने मुनाफ़िक पूरुषों तथा स्त्रियों और काफिरों को नरक की अग्नि का वचन दिया है। जिस में वे सदावासी होंगे। वही उन को प्रयाप्त है। और अल्लाह ने उन्हें धिक्कार दिया है। और उन्हीं के लिये स्थायी यातना है।

69. इन की दशा वही हुई जो इन से पहले के लोगों की हुई। वह बल में इन से कड़े और धन तथा संतान में इन से अधिक थे। तो उन्होंने अपने (संसारिक) भाग का आनन्द लिया, अतः तुम भी अपने भाग का आनन्द लो, जैसे तुम से पूर्व के लोगों ने आनन्द लिया। और तुम भी उलझते हो जैसे वह उलझते रहे, उन्हीं के कर्म लोक तथा परलोक में व्यर्थ गये, और वही क्षति में हैं।

70. क्या इन को उन के समाचार नहीं पहुँचे जो इन से पहले थे: नूह की जाति तथा आद और समूद तथा इब्राहीम की जाति के और मद्यन^[3] के वासियों

يَأَمْرُونَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَا عَنِ الْمَعْرُوفِ
وَيَقْضُونَ أَيْدِيهِمْ سَوْالِهِ فَتَبَرُّهُمْ لَانَّ
الْمُنْفِقُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ⑤

وَعَذَابَ اللَّهِ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفَقِتُ وَالْكُفَّارُ نَارٌ
جَهَنَّمُ خَلِدِينَ فِيهَا فِي حَسْبِهِمْ وَلَعَنْهُمْ
اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ⑥

كَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوا أَشَدَّ مِنْكُمْ فُحْشَةً
وَالْكُفَّارُ أَمْوَالُهُمْ أَوْلَادُهُمْ فَإِنْ سَعَتْ عُلَاقَةُ قُلُومْ
فَإِنْ سَعَتْ عُلَاقَةُ عُلَاقَةٍ كَمَا اسْتَسْعَى الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِكُمْ بِعَلَاقَةِ قُلُومْ وَحُصُونَ كَالَّذِينَ
خَاصُّوا أُولَئِكَ حِيطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْخَسِرُونَ ⑤

أَلْمَ يَأْتِيهِمْ بِنَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمٌ نُوحٌ
وَعَادٌ وَثَمُودٌ وَقَوْمُ إِبْرَاهِيمَ وَأَصْحَابِ
مَدْيَنَ وَالْمُؤْنَقَنَاتِ أَتَهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ

1 अर्थात् दान नहीं करते।

2 अल्लाह के भुला देने का अर्थ है: उन पर दया न करना।

3 मद्यन के वासी शुएब अलैहिस्सलाम की जाति थे।

के, और उन बस्तियों के जो पलट दी^[1] गई उन के पास उन के रसूल खुली निशानियाँ लाये, और ऐसा नहीं हो सकता था कि अल्लाह उन पर अत्याचार करता, परन्तु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार^[2] कर रहे थे।

71. तथा ईमान वाले पुरुष और स्त्रियाँ एक-दूसरे के सहायक हैं। वे भलाई का आदेश देते तथा बुराई से रोकते हैं, और नमाज़ की स्थापना करते तथा ज़कात देते हैं। और अल्लाह तथा उस के रसूल की आज्ञा का पालन करते हैं। इन्हीं पर अल्लाह दया करेगा, वास्तव में अल्लाह प्रभुत्वशाली तत्वज्ञ है।

72. अल्लाह ने ईमान वाले पुरुषों तथा ईमान वाली स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों का वचन दिया है जिन में नहरें प्रवाहित होंगी। वह उस में सदावासी होंगे, और स्थाई स्वर्गों में पवित्र आवासों का। और अल्लाह की प्रसन्नता इन सब से बड़ा प्रदान होगी, वही बहुत बड़ी सफलता है।

73. हे नबी! काफिरों और मुनाफिकों से जिहाद करो, और उन पर सख्ती करो, उन का आवास नरक है। और वह बहुत बुरा स्थान है।

74. वह अल्लाह की शपथ लेते हैं कि उन्हों

1 इस से अभिप्राय लूत अलैहिस्सलाम की जाति है। (इब्ने कसीर)

2 अपने रसूलों को अस्वीकार कर के।

فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنفَسُهُمْ
يَظْلِمُونَ ①

وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلَيَاءُ
بَعْضٍ يَأْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ وَيَنْهَا عَنِ
الْمُنْكَرِ وَيَعْمَلُونَ الصَّلَاةَ وَيَنْهَا عَنِ الرُّكُونَ
وَيَطْبِعُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ أَوْلَيَكُمْ سَيِّدُهُمْ
اللَّهُ أَكْبَرُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ②

وَعَدَ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتُ جَنَّتٍ مَغْرِبِيَّةً
مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَرُ خَلِيلِينَ فِيهَا وَمَسِكَنٌ طَيِّبَةٌ
فِي جَنَّتٍ عَدِينَ وَرِضْوَانٌ مِنَ اللَّهِ أَكْبَرُ
ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ③

إِنَّهَا الْيَقِنُ جَاهِدِ الْكُفَّارِ وَالْمُنْتَقِبِينَ وَاغْلَظُ
عَلَيْهِمْ وَمَا أَدْهَمُ جَهَنَّمَ وَبَشَّ المُصِيرَ ④

يَحْلِفُونَ بِاللَّهِ مَا قَاتَلُوا وَلَقَدْ قَاتَلُوا كُلَّهُمْ الْكُفَّارَ

ने यह^[1] बात नहीं कही। जब कि वास्तव में उन्होंने कुफ्र की बात कही^[2] है। और इस्लाम ले आने के पश्चात् काफिर हो गए हैं। और उन्होंने ऐसी बात का निश्चय किया था जो वे कर नहीं सकते। और उन को यही बात बुरी लगी कि अल्लाह और उस के रसूल ने उन को अपने अनुग्रह से धनी^[3] कर दिया। अब यदि वह क्षमायाचना कर लें तो उन के लिये उत्तम है। और यदि विमुख हों तो अल्लाह उन्हें दुश्खदायी यातना लोक तथा प्रलोक में देगा। और उन का धरती में कोई संरक्षक और सहायक न होगा।

75. उन में से कुछ ने अल्लाह को वचन दिया था कि यदि वह अपनी दया से हमें (धन-धान्य) प्रदान करेगा तो हम अवश्य दान करेंगे, और सुकर्मियों में हो जायेंगे।

76. फिर जब अल्लाह ने अपनी दया से उन्हें प्रदान कर दिया तो उस से कंजूसी कर गये, और वचन से विमुख हो कर फिर गये।

77. तो इस का परिणाम यह हुआ कि उन

1 अर्थात् ऐसी बात जो रसूल और मुसलमानों को बुरी लगे।

2 यह उन बातों की ओर संकेत है जो द्विधावादियों ने तबूक की मुहिम के समय की थी। उन की ऐसी बातों के विवरण के लिये (देखिये: सूरह मुनाफ़िकून, आयत: 7-8)

3 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मदीना आने से पहले मदीने का कोई महत्व न था। आर्थिक दशा भी अच्छी नहीं थी। जो कुछ था यहूदियों के अधिकार में था। वह ब्याज भक्षी थे, शाराब का व्यापार करते थे, और अस्त्र-शस्त्र बनाते थे। आप के आगमन के पश्चात् आर्थिक दशा सुधर गई, और व्यवसायिक उन्नति हुई।

وَكَفَرُوا بِعَدِ اسْلَامِهِمْ وَهُمْ وَالْمُؤْمِنُونَ
وَمَا نَقْمُدُ الْأَنْ أَعْتَدْنَا لَهُمُ الْأَنْهَارُ
فَضْلِهِ فَإِنْ يَتُوبُوا إِلَيْكَ خَيْرٌ لَّهُمْ وَإِنْ
يَتَوَلُوا فَإِنَّمَا يُعَذِّبُهُمُ اللَّهُ عَذَابًا أَلِيمًا فِي الدُّنْيَا
وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ قُلْبٍ وَلَا
نَصْدِيقٌ^④

وَمِنْهُمْ مَنْ عَاهَدَ اللَّهَ لِئِنْ أَتَنَا مُنْ فَضْلِهِ
لَنَصْدِقَنَّ وَلَنَنْكِرَنَّ مِنَ الظَّالِمِينَ^⑤

فَلَمَّا أَتَاهُمْ مِمَّنْ فَضْلِهِ بَخْلُوا بِهِ وَتَوَلُّوا وَهُمْ
مُعْرِضُونَ^⑥

فَاعْقِبَهُمْ نَذَارًا فِي قُلُوبِهِمْ إِلَى يَوْمِ يَلْقَوْنَهُ

के दिलों में द्विधा का रोग उस दिन तक के लिये हो गया कि यह अल्लाह से मिलें। क्यों कि उन्होंने उस वचन को भंग कर दिया जो अल्लाह से किया था, और इस लिये कि वे झूठ बोलते रहे।

78. क्या उन्हें इस का ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह उन के भेद की बातें तथा सुनगुन को भी जानता है? और वह सभी भेदों का अति ज्ञानी है।

79. जिन की दशा यह है कि वह ईमान वालों में से स्वेच्छा दान करने वालों पर दानों के विषय में आक्षेप करते हैं तथा उन को जो अपने परिश्रम ही से कुछ पाते (और दान करते हैं) यह (मुनाफ़िक़) उन से उपहास करते हैं, अल्लाह उन से उपहास करता^[1] है, और उन्हीं के लिये दुखदायी यातना है।

80. (हे नबी!) आप उन के लिये क्षमा याचना करें अथवा न करें, यदि आप उन के लिये सत्तर बार भी क्षमायाचना करें तो भी अल्लाह उन्हें क्षमा नहीं करेगा, इस कारण कि उन्होंने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ़ कर दिया। और अल्लाह अवैज्ञाकारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।

1 अर्थात् उन के उपहास का कुफ़ल दे रहा है। अबू मस्कुद (रजियल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि जब हमें दान देने का आदेश दिया गया तो हम कमाने के लिये बोझ लादने लगे ताकि हम दान कर सकें। और अबू अकील (रजियल्लाहु अन्हु) आधा साअ (सवा किलो) लायें। और एक व्यक्ति उन से अधिक लेकर आया। तो मुनाफ़िकों ने कहा: अल्लाह को उस के (थोड़े से) दान की ज़रूरत नहीं। और यह दिखावे के लिये (अधिक) लाया है। इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी- 4668)

يَمَا أَخْلَقُوا لِلَّهِ مَا وَعَدُوهُ وَبِهَا كَانُوا
يَكْنِيْنُونَ ⑤

أَكْرَمُهُمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ
وَنَجُوا لَهُمْ وَأَنَّ اللَّهَ عَلِمَ الْغَيْوَبَ ٦

الَّذِينَ يَلْمِزُونَ الْمُكْتَفِعِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ
فِي الصَّدَقَاتِ وَالَّذِينَ لَا يَحْدُودُونَ إِلَّا
جُهْدَهُمْ فَيَسْخُرُونَ مِنْهُمْ سَخْرَيَةً
مِنْهُمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ٧

إِسْتَغْفِرَ لَهُمْ أَوْ لَا إِسْتَغْفِرَ لَهُمْ
سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَمَّا يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ذَلِكَ يَأْتُهُمْ
كُفَّارٌ وَاللَّهُ أَنْذِرَ رَسُولَهُ
كُفَّارًا يَأْتُونَهُ وَرَسُولُهُ
كُفَّارًا وَاللَّهُ لَأَنْهُمْ بِالْقَوْمِ
الْفَاسِقِينَ ٨

81. वे प्रसन्न^[1] हुये जो पीछे कर दिये गये, अपने बैठे रहने के कारण अल्लाह के रसूल के पीछे। और उन्हें बुरा लगा कि जिहाद करें अपने धनों तथा प्राणों से अल्लाह की राह में, और उन्होंने कहा कि गर्मी में न निकलो। आप कह दें कि नरक की अग्नि गर्मी में इस से भीषण है, यदि वह समझते (तो ऐसी बात न करते)।
82. तो उन्हें चाहिये कि हँसें कम, और रोयें अधिक। जो कुछ वे कर रहे हैं उस का बदला यही है।
83. तो (हे नबी!) यदि आप को अल्लाह इन (द्विधावादियों) के किसी गिरोह के पास (तबूक से) वापस लाये, और वह आप से (किसी दूसरे युद्ध में) निकलने की अनुमति मांगें तो आप कह दें कि तुम मेरे साथ कभी न निकलोगे, और न मेरे साथ किसी शत्रु से युद्ध कर सकोगे। तुम प्रथम बार बैठे रहने पर प्रसन्न थे तो अब भी पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो।
84. (हे नबी!) आप उन में से कोई मर जाये तो उस के जनाजे की नमाज़ कभी न पढ़ें, और न उस की समाधि (कब्र) पर खड़े हों। क्योंकि उन्होंने ने अल्लाह और उस के रसूल के साथ कुफ्र किया है, और अवज्ञाकारी रहते हुये मरे^[2] हैं।

فِرَّ الْجَاهِلُونَ بِمَقْعِدِهِمْ خَلَفَ رَسُولِ اللَّهِ وَكُفُّرُهُوا
أَنْ يُجَاهِدُوا يَا مَوْلَاهُمْ وَأَقْسِمُهُمْ فِي سَيِّدِ اللَّهِ
وَقَالُوا لَا إِنْفِرَادٌ فِي الْحَرْبِ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُ حَرًّا
لَوْ كَانُوا يَفْقِهُونَ ⑩

فَلِيَضْحَكُوا أَفَلِيْلَا ذَلِكُوا أَكْثَرُهُمْ جَزَاءً لَهُمْ
كَانُوا يَكْسِبُونَ ⑪

فَإِنْ رَجَعُكَ اللَّهُ إِلَى طَرِيقَةٍ مِنْهُمْ فَاتَّذَّنُوكَ
لِلْخُرُوجِ فَقُلْ أَنْ تَخْرُجُوا مَعِيَ أَبَدًا وَلَنْ
تُقْتَلُوا مَعِيَ عَدُوا إِنَّمَا رَضِيَ اللَّهُ بِالْقُوَّةِ أَوْ
مَرْقَةٍ فَاقْعُدُوا مَعَ الْغَلَقِينَ ⑫

وَلَا تُصِلِّ عَلَى أَحَدٍ مِنْهُمْ مَاتَ أَبَدًا وَلَا تُمْرِنَ
عَلَى قَدْرِهِ إِنَّهُمْ كُفَّارٌ وَإِنَّهُمْ لَا يَسْمَلُهُ وَمَا لَوْا
وَهُمْ فَاسِقُونَ ⑬

1 अर्थात् मुनाफिक़ जो मदीना में रह गये और तबूक की यात्रा में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ नहीं गये।

2 सहीह हदीस में है कि जब नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मुनाफिकों

85. आप को उन के धन तथा उन की संतान चकित न करे, अल्लाह तो चाहता है कि इन के द्वारा उन्हें संसार में यातना दे, और उन के प्राण इस दशा में निकलें कि वह काफिर हों।
86. तथा जब कोई सूरह उतारी गई कि अल्लाह पर ईमान लाओ, तथा उस के रसूल के साथ जिहाद करो तो आप से उन (मुनाफिकों) में से समाई वालों ने अनुमति ली। और कहा कि आप हमें छोड़ दों हम बैठने वालों के साथ रहेंगे।
87. तथा प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रहें, और उन के दिलों पर मुहर लगा दी गई। अतः वह नहीं समझते।
88. परन्तु रसूल ने और जो आप के साथ ईमान लाये, अपने धनों और प्राणों से जिहाद किया, और उन्हीं के लिये भलाईयाँ हैं, और वही सफल होने वाले हैं।
89. अल्लाह ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तथ्यार कर दिये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, और यही बड़ी सफलता है।
90. और देहातियों में से कुछ बहाना करने वाले आये, ताकि आप उन्हें अनुमति दें। तथा वह बैठे रह गये जिन्होंने अल्लाह और उस के रसूल से

وَلَا يُعْجِبُكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَلَا ذَهَرَ إِلَيْهِمْ رَبُّكُمْ إِنْ
يُعَذِّبَهُمْ بِمَا فِي الدُّنْيَا وَإِنَّهُمْ وَهُمُ الْكُفَّارُ لَذُونٌ

وَلَا أَنْزَلْنَا سُورَةً أَنْ اِمْتُوْا بِاللَّهِ وَجَاهَهُ دُوَّامَهُ
رَسُولُهُ وَاسْتَأْذَنَكَ اُولُو الْكَوْلِ مِنْهُمْ وَقَالَ اذْرَنَا
لَكُنْ مَعَ الْقَعْدِينَ

رَضُوا بِأَنْ يَكُونُوا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطَبِيعَ عَلَى
قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ

لِكِنَ الرَّسُولُ وَالَّذِينَ امْتُوْا مَعَهُ جَهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفَسُهُمْ وَأُولَئِكَ لَهُمُ الْخَيْرُ
وَأُولَئِكَ هُمُ الْمُغْلَظُونَ

أَعْدَ اللَّهُ لَهُمْ جَهَنَّمْ بَئْرَىٰ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْفُرُ
خَلِدِينَ فِيهَا ذَلِكَ الْغَوْرُ الْعَظِيمُ

وَجَاءَ الْمُعْذِرُونَ مِنَ الْأَغْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ
وَقَعَدَ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وَرَسُولِهِ سِيِّئِينَ
الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّهُمْ عَدَائُ الْكِبِيرِ

झूठ बोला। तो इन में से काफिरों को दुखदायी यातना पहुँचेगी।

91. निर्बलों तथा रोगियों और उन पर जो इतना नहीं पाते कि (तय्यारी के लिये) व्यय कर सकें कोई दोष नहीं, जब अल्लाह और उस के रसूल के भक्त हों, तो उन पर (दोषारोपण) की कोई राह नहीं।
92. और उन पर जो आप के पास जब आयें कि आप उन के लिये सवारी की व्यवस्था कर दें, और आप कहें कि, मेरे पास इतना नहीं कि तुम्हारे लिये सवारी की व्यवस्था करूँ, तो वह इस दशा में वापिस हुये कि शोक के कारण उन की आँखें आँसू बहा रही^[1] थीं।
93. दोष केवल उन पर है जो आप से अनुमति माँगते हैं जब कि वह धनी हैं और वे इस से प्रसन्न हो गये कि स्त्रियों के साथ रह जायेंगे। और अल्लाह ने उन के दिलों पर मुहर लगा दी, इस लिये वह कुछ नहीं जानते।
94. वह तुम से बहाने बनायेंगे, जब तुम उन के पास (तबूक से) वापिस आओगे। आप कह दें कि बहाने न बनाओ, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे। अल्लाह ने हमें तुम्हारी दशा बता दी है। तथा भविष्य में भी अल्लाह

لَيْسَ عَلَى الْقُصَفَاءِ وَلَا عَلَى الْمُرْضِيِّ وَلَا عَلَى
الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ مَا يَنْتَفِعُونَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوا
بِلِلَّهِ وَرَسُولِهِ مَا عَلَى الْمُحْسِنِينَ مِنْ سَيِّئَاتٍ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ^⑤

وَلَا عَلَى الَّذِينَ إِذَا أَتَوْا لِتَعْمِلِهِمْ قُلْتَ
لَا أَحِدُ مَا أَحْمَلْتُمْ عَلَيْهِ تَوْلُوا وَأَعْيَنْتُمْ
تَفْيُضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا لَا يَجِدُونَ مَا
يَنْتَفِعُونَ^٦

إِنَّمَا الظَّمَآنُ عَلَى الَّذِينَ يَسْتَأْذِنُونَكَ
وَهُمْ أَغْنِيَاءُ رَضُوا بِمَا يَكُونُونَ مَمْمَنِينَ
الْخَوَافِقُ وَطَبَّامُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ^٧

يَعْتَدِنُ رُؤُونَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعُوكُمُ الْيَهُودُ
فَلْمَنْ لَا يَعْتَدِنُ رُؤُونَ نُؤُونَ لَكُمْ قَدْ بَيَانٌ
إِنَّمَا مِنْ أَخْبَارِكُمْ وَسَيَرِيَ اللَّهُ عَمَلَكُمْ
وَرَسُولُهُ ثُمَّ تَرَدُونَ إِلَى عِلْمِ الْغَيْبِ وَالشَّهادَةِ
فَيَتَسَمَّلُونَ كُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ^٨

1) यह विभिन्न कबीलों के लोग थे। जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुये कि आप हमारे लिये सवारी का प्रबंध कर दें। हम भी आप के साथ तबूक के जिहाद में जायेंगे। परन्तु आप सवारी का कोई प्रबंध न कर सके और वह रोते हुये वापिस हो गये। (इन्हे कसीर)

और उस के रसूल तुम्हारा कर्म देखेंगे। फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के ज्ञानी (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे। फिर वह तुम्हें बता देगा कि तुम क्या कर रहे थे।

95. वह तुम से अल्लाह की शपथ खायेंगे, जब तुम उन की ओर वापिस आओगे ताकि तुम उन से विमुख हो जाओ। तो तुम उन से विमुख हो जाओ। वास्तव में वह मलीन हैं और उन का आवास नरक है उस के बदले जो वह करते रहे।

96. वह तुम्हारे लिये शपथ खायेंगे, ताकि तुम उन से प्रसन्न हो जाओ, तो यदि तुम उन से प्रसन्न हो गये, तब भी अल्लाह उल्लंघनकारी लोगों से प्रसन्न नहीं होगा।

97. देहाती^[1] अविद्यास तथा द्विवधा में अधिक कड़े और अधिक योग्य है कि: उस (धर्म) की सीमाओं को न जानें, जिसे अल्लाह ने उतारा है। और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

98. देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो अपने दिये हुए दान को अर्थदण्ड समझते हैं और तुम पर काल चक्र की प्रतीक्षा करते हैं। उन्हीं पर काल कुचक्र आ पड़ा है। और अल्लाह सब कुछ सुनने जानने वाला है।

99. और देहातियों में कुछ ऐसे भी हैं जो

سَيَحْلِفُونَ بِاللَّهِ لَكُمْ إِذَا الْقَلَبُوا إِلَيْهِمْ لَا يُعْرِضُوا
عَنْهُمْ فَإِغْرِضُوا عَنْهُمْ رَجُلٌ مَّا دُرْجُ
جَهَنَّمَ جَزَاءً لِّمَا كَانُوا لِكَسْبِهِنَّ ۝

يَحْلِفُونَ لِكُمْ لَرَضُوا عَنْهُمْ فَإِنْ رَضُوا عَنْهُمْ
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَرْضِي عَنِ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

الْأَعْرَابُ أَشَدُّ الْكُفَّارَ نِفَاقًا وَأَجْدَارُ
الْأَيْمَنِ وَاحْدَادُ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ
وَاللَّهُ عَلَيْهِ حِكْمَةٌ ۝

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَنْخُذُ مَا يُنْفِقُ مَعْرِمًا
وَيَرْبَصُ بِكُلِّ الدُّوَلِ وَأَبْرَأُ عَلَيْهِمْ دَائِرَةٌ
السُّوءُ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمَ

1 इस से अभिप्राय मदीना के आस पास के कबीले हैं।

अल्लाह तथा अंतिम दिन (प्रलय) पर ईमान (विश्वास) रखते हैं, और अपने दिये हुये दान को अल्लाह की समीप्ता तथा रसूल के आशीर्वादों का साधन समझते हैं। सुन लो! यह वास्तव में उन के लिये समीप्य का साधन है। शीघ्र ही अल्लाह उन्हें अपनी दया में प्रवेश देगा, वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

100. तथा प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन^[1] और अन्सारी, और जिन लोगों ने सुकर्म के साथ उन का अनुसरण किया अल्लाह उन से प्रसन्न हो गया। और वे उस से प्रसन्न हो गये। तथा उस ने उन के लिये ऐसे स्वर्ग तय्यार किये हैं जिन में नहरें प्रवाहित हैं। वह उस में सदावासी होंगे, वही बड़ी सफलता है।
101. और जो तुम्हारे आस पास ग्रामीण हैं उन में से कुछ मुनाफिक (द्विधावादी) हैं। और कुछ मदीना में हैं। जो (अपने) निफाक में अभ्यस्त (निपुण) हैं। आप उन्हें नहीं जानते, उन्हें हम जानते हैं। हम उन्हें दो बार^[2] यातना देंगे। फिर घोर यातना की ओर फेर दिये जायेंगे।

الآخر وَيَخْدُ مَا يُنْفِقُ قَرِيبٌ عِنْدَ اللَّهِ
وَصَلَوَاتُ الرَّسُولِ الْأَكَانَهَا قَرِبَةُ لَهُمْ
سَيِّدُ خَلْقِهِمْ إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ
رَّحِيمٌ ﴿٦﴾

وَالشَّيْقُونَ الْأَكَلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ
وَالَّذِينَ أَتَبْعَهُمْ بِإِحْسَانٍ رَّضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ
وَرَضُوا عَنْهُ وَاعْدَاهُمْ جَهَنَّمُ بَغْرِيْ عَنْهَا الْأَنْهَرُ
خَلِيدُونَ فِيهَا أَبَدٌ إِذَا كَانَ الْغَرْبُ الْعَظِيمُ ﴿٧﴾

وَمِنْ حَوْلَمِ الْأَعْرَابِ مُنْفَقُونَ وَمِنْ
أَهْلِ الْمَدِينَةِ شَرَدُوا مَعَ الْقِنَاقِ لَا تَعْلَمُهُمْ
نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ سَعِدُ بِهِمْ مَرْتَبُنَ تَغْرِيْكُونَ
إِلَى عَذَابٍ عَظِيمٍ ﴿٨﴾

1 प्रथम अग्रसर मुहाजिरीन उन को कहा गया है जो मक्का से हिज्रत करके हुदैविया की संधि सन् 6 से पहले मदीना आ गये थे। और प्रथम अग्रसर अन्सार मदीना के वह मुसलमान हैं जो मुहाजिरीन के सहायक बने और हुदैवियों में उपस्थित थे। (इब्ने कसीर)

2 संसार में तथा कब्र में फिर परलोक की घोर यातना होगी। (इब्ने कसीर)

102. और कुछ दूसरे भी हैं जिन्होंने अपने पापों को स्वीकार कर लिया है। उन्होंने कुछ सूकर्म और कुछ दूसरे कुकर्म को मिश्रित कर लिया है। आशा है कि: अल्लाह उन्हें क्षमा कर देगा। वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
103. हे नबी! आप उन के धनों से दान लें, और उस के द्वारा उन (के धनों) को पवित्र और उन (के मनों) को शुद्ध करें। और उन्हें आशीर्वाद दें। वास्तव में आप का आशीर्वाद उन के लिये संतोष का कारण है। और अल्लाह सब सुनने जानने वाला है।
104. क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने भक्तों की क्षमा स्वीकार करता तथा (उन के) दानों को अंगीकार करता है? और वास्तव में अल्लाह अति क्षमी दयावान् है।
105. और (हे नबी!) उन से कहो कि कर्म करते जाओ। अल्लाह तथा उस के रसूल और ईमान वाले तुम्हारा कर्म देखेंगे। (फिर) उस (अल्लाह) की ओर फेरे जाओगे जो परोक्ष तथा प्रत्यक्ष (छुपे तथा खुले) का ज्ञानी है। तो वह तुम्हें बता देगा जो तुम करते रहे।
106. और (इन के सिवाय) कुछ दूसरे भी हैं जो अल्लाह के आदेश के लिये विलंबित^[1] हैं। वह उन्हें दण्ड दे,

وَالْخَرُونَ أَعْرَقُوا بِذُنُوبِهِمْ حَلَطُوا عَمَالَكَ لَعْنَاهُمْ
وَالْخَرُونَ أَعْسَى اللَّهُ أَنْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ
إِنَّ اللَّهَ عَفُورٌ حَنِيمٌ^①

حُنُونٌ مِّنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةٌ تُطَهِّرُهُمْ وَتُرْكِيهِمْ بِهَا
وَصَلَلٌ عَلَيْهِمْ إِنَّ صَلَوَاتَكَ سَكَنٌ لِّهُمْ وَاللَّهُ
سَمِيعٌ عَلَيْهِمْ^②

أَفَرَيْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ هُوَ يَقْبِلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادٍ
وَيَأْخُذُ الصَّدَقَاتِ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْوَتَابُ
الْتَّرجِيمُ^③

وَقُلْ أَعْمَلُوا فَسِيرِيَ اللَّهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ
وَالْمُؤْمِنُونَ وَسَرِدُونَ إِلَى عِلْمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيَنْتَكُلُونَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ^④

وَالْغَرُونَ مُرْجَونَ لِأَمْرِ اللَّهِ وَآتَى يُعْلَمُ بِهِمْ وَآتَى
يَتُوبَ عَلَيْهِمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ^⑤

¹ अर्थात् अपने विषय में अल्लाह के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह तीन व्यक्ति

अथवा उन को क्षमा कर दे तो
अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।

107. तथा (द्विधावादियों में) वह भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद^[1] बनाई, इस लिये कि (इस्लाम को) हानि पहुँचायें, तथा कुफ़्र करें, और ईमान वालों में विभेद उत्पन्न करें, तथा उस का घात-स्थल बनाने के लिये जो इस से पूर्व अल्लाह और उस के रसूल से युद्ध कर^[2] चुका है। और वह अवश्य शपथ लेंगे कि हमारा संकल्प भलाई के सिवा और कुछ न था। तथा अल्लाह साक्ष्य देता है कि वह निश्चय मिथ्यावादी हैं।

108. (हे नबी!) आप उस में कभी खड़े

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا فِرَارًا وَكُفُرًا
وَنَفَرُ يُقْتَلُ بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ وَلَا صَادَ الْهَمْ
حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ مِنْ قَبْلٍ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ
أَرَدُنَا إِلَّا لِلْحُسْنِي وَاللَّهُ يَشْهُدُ إِنَّهُمْ
لَكُلُّ بُونَ

لَا نَعْمَلُ فِيهِ أَبْدًا لِمَسْجِدٍ أَيْسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ

थे, जिन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तबूक से वापिस आने पर यह कहा कि वह अपने आलस्य के कारण आप का साथ नहीं दे सके। आप ने उन से कहा कि अल्लाह के आदेश की प्रतीक्षा करो। और आगामी आयत 117 में उन के बारे में आदेश आ रहा है।

1 इस्लामी इतिहास में यह «मस्जिदे ज़िरार» के नाम से याद की जाती है। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना आये तो आप के आदेश से "कुबा" नाम के स्थान में एक मस्जिद बनाई गई। जो इस्लामी युग की प्रथम मस्जिद है। कुछ मुनाफिकों ने उसी के पास एक नई मस्जिद का शनिर्माण किया। और जब आप तबूक के लिये निकल रहे थे तो आप से कहा कि आप एक दिन उस में नमाज पढ़ा दें। आप ने कहा कि: यात्रा से वापसी पर देखा जायेगा। और जब वापिस मदीना के समीप पहुँचे तो यह आयत उतरी, और आप के आदेश से उसे ध्वस्त कर दिया गया। (इब्ने कसीर)

2 इस से अभिप्रेत अबू आमिर राहिब है। जिस ने कुछ लोगों से कहा कि एक मस्जिद बनाओ और जितनी शक्ति और अस्त्र-शस्त्र हो सके तथ्यार कर लो। मैं रोम के राजा कैसर के पास जा रहा हूँ। रोमियों की सेना लाऊँगा, और मुहम्मद तथा उस के साथियों को मदीना से निकाल दूँगा। (इब्ने कसीर)

न हों। वास्तव में वह मस्जिद^[1] जिस का शिलान्यास प्रथम दिन से अल्लाह के भय पर किया गया है वह अधिक योग्य है कि आप उस में (नमाज़ के लिये) खड़े हों। उस में ऐसे लोग हैं, जो स्वच्छता से प्रेम^[2] करते हैं, और अल्लाह स्वच्छ रहने वालों से प्रेम करता है।

109. तो क्या जिस ने अपने निर्माण का शिलान्यास अल्लाह के भय और प्रसन्नता के आधार पर किया हो, वह उत्तम है, अथवा जिस ने उस का शिलान्यास एक खाई के गिरते हुये किनारे पर किया हो, जो उस के साथ नरक की अग्नि में गिर पड़ा? और अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन नहीं देता।
110. यह निर्माण जो उन्होंने किया बराबर उन के दिलों में एक सदेह बना रहेगा। परन्तु यह कि उन के दिलों को खण्ड खण्ड कर दिया जाये, और अल्लाह सर्वज्ञ तत्वज्ञ है।
111. निःसन्देह अल्लाह ने ईमान वालों के प्राणों तथा उन के धनों को इस के बदले ख़रीद लिया है कि उन के लिये स्वर्ग है। वह अल्लाह की राह में युद्ध करते हैं, वह मारते तथा मरते हैं। यह अल्लाह पर सत्य वचन

أَوْلَى بِيَوْمِ الْحِجَّةِ أَنْ تَعُودُ مَفْتُولًا فِي هَرِيجَانٍ
يُجْبَوُنَ أَنْ يَتَطَهَّرُوا وَإِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُطَهَّرِينَ^④

أَفَمَنْ أَسَسَ بُنيَانَهُ عَلَى تَقْوَىٰ مِنَ اللَّهِ
وَرِضْوَانٍ خَيْرًا مِّنْ أَسَسَ بُنيَانَهُ عَلَى شَنَّا
جُرُفٍ هَارِقًا نَّهَارِيهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ وَإِنَّ اللَّهَ
لَا يَهُدِي الْقَوْمَ الظَّلِيمِينَ^⑤

لَا يَرَالْ بُنيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا إِيَّاهُ
فَلَوْ بِيَوْمٍ لَا يَنْتَهُمْ قَلْوَاهُمْ وَلَهُمْ حَكْلُهُمْ^⑥

إِنَّ اللَّهَ أَشْرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ يُقَاتِلُونَ فِي
سَبِيلِ اللَّهِ فَيُقَاتِلُونَ وَيُقَاتَلُونَ بِعَدًا
عَلَيْهِ حَقَّاقِيَّةِ الْكُورَانِ وَالْإِيمَانِ وَالْقُرْآنِ
وَمَنْ أَوْقَى بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ فَأَسْتَبِرُوا

1 इस मस्जिद से अभिप्राय कुबा की मस्जिद है। तथा मस्जिद नबवी शरीफ भी इसी में आती है। (इब्ने कसीर)

2 अर्थात् शुद्धता के लिये जल का प्रयोग करते हैं।

है, तौरात तथा इंजील और कुर्�आन में और अल्लाह से बढ़ कर अपना वचन परा करने वाला कौन हो सकता है? अतः अपने इस सौदे पर प्रसन्न हो जाओ जो तुम ने किया। और यही बड़ी सफलता है।

112. जो क्षमा याचना करने, वंदना करने तथा अल्लाह की स्तुति करने वाले, रोज़ा रखने तथा रुकुअ और सज्दा करने वाले भलाई का आदेश देने और बुराई से रोकने वाले, तथा अल्लाह की सीमाओं की रक्षा करने वाले हैं और (हे नबी!) आप ऐसे ईमान वालों को शुभ सूचना सुना दें।
113. किसी नबी तथा^[1] उन के लिये जो ईमान लाये हों योग्य नहीं है कि मुशर्रिकों (मिश्रणवादियों) के लिये क्षमा की प्रार्थना करें। यद्यपि वह उन के समीपवर्ती हों, जब यह उजागर हो गया कि वास्तव में वह नारकी^[2] हैं।
114. और इब्राहीम का अपने बाप के लिये क्षमा की प्रार्थना करना केवल इस लिये हुआ कि उस ने

بِيَنِيْكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمُ بِهِ وَذَلِكَ هُوَالْفَوْزُ
الْعَظِيْمُ^①

الثَّائِبُونَ الْعَيْدُونَ الْحَمْدُونَ الشَّاهِرُونَ
الرَّاكِعُونَ الشَّاجِدُونَ الْأَمْرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالثَّانِهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَقِيقُونَ لِعَدُودِ اللَّهِ
وَبَشِّرُ الْمُؤْمِنِينَ^②

مَا كَانَ لِلشَّيْءِ وَالَّذِيْنَ آمَنُوا أَنْ يُسْتَغْفِرُوا
لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولَئِيْ قُرْبَى مِنْ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَنَاحِيْوَ^③

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيْمَ لِأَيِّنِيْ وَالْأَعْنَ
مَوْعِدَةٌ وَعَدَهَا إِلَيْا هُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ أَنَّهُ

1 हदीस में है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा अबू तालिब के निधन का समय आया तो आप उस के पास गये। और कहा: चाचा! «ला इलाहा इल्लाह» पढ़ लो। मैं अल्लाह के पास तुम्हारे लिये इस को प्रमाण बना लूँगा। उस समय अबू जहल और अब्दुल्लाह बिन अबु उमय्या ने कहा: क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के धर्म से फिर जाओगे? (अतः वह काफिर ही मरा।) तब आप ने कहा: मैं तुम्हारे लिये क्षमा की प्रार्थना करता रहूँगा, जब तक उस से रोक न दिया जाऊँ। और इसी पर यह आयत उतरी। (सहीह बुखारी- 4675)

2 देखिये: सूरह माइदा, आयत: 72, तथा सूरह निसा, आयत: 48, 116।

उस को इस का बचन दिया^[1] था और जब उस के लिये उजागर हो गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो उस से विरक्त हो गया। वास्तव में इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय सहनशील था।

115. अल्लाह ऐसा नहीं है कि किसी जाति को मार्गदर्शन देने के पश्चात् कुपथ कर दे, जब तक उन के लिये जिस से बचना चाहिये उसे उजागर न कर दे। वास्तव में अल्लाह प्रत्येक वस्तु को भली भाँति जानने वाला है।
116. वास्तव में अल्लाह ही है, जिस के अधिकार में आकाशों तथा धरती का राज्य है। वही जीवन देता तथा मारता है। और तुम्हारे लिये उस के सिवा कोई संरक्षक और सहायक नहीं है।
117. अल्लाह ने नबी तथा मुहाजिरीन और अन्सार पर दया की, जिन्होंने तंगी के समय आप का साथ दिया, इस के पश्चात् कि उन में से कुछ लोगों के दिल कुटिल होने लगे थे। फिर उन पर दया की। निश्चय वह उन के लिये अति करुणामय दयावान् है।
118. तथा उन तीनों^[2] पर जिन का मामला विलंबित कर दिया गया था,

عَدُوٌّ لِّلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَا وَآهٌ حَلِيلٌ^⑦

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضْلِلَ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ
حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَقْوَىٰ إِنَّ اللَّهَ
يُكَلِّلُ شَئْوَنَ عَلَيْهِمْ^⑧

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يُهْبِي
وَيُبَيِّنُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ
قُرْبَىٰ وَلَا نَصِيرٌ^⑨

لَقَدْ تَابَ اللَّهُ عَلَى الْيَتِيمِ وَالْمُفْجَرِينَ
وَالْأَنْصَارِ الَّذِينَ اتَّبَعُوهُ فِي سَاعَةٍ
الْعُرَرَةِ مِنْ بَعْدِ مَا كَادُوا يَرِيدُونَ
فِرْيقٌ وَنَهُمْ شَرِّكَابٌ عَلَيْهِمْ إِنَّهُ يَرِيدُ
رَءُوفٌ رَّحِيمٌ^⑩

وَعَلَى الشَّيْطَانِ الَّذِينَ خَلَقَهُمْ حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ

1 देखिये: सूरह मुम्तहिना, आयत: 4।

2 यह वही तीन हैं जिन की चर्चा आयत नं. 106 में आ चुकी है। इन के नाम थे 1-काब बिन मालिक, 2- हिलाल बिन उमर्या, 3- मुरारह बिन रबीआ। (सहीह बुखारी - 4677)

जब उन पर धरती अपने विस्तार के होते सिकुड़ गई, और उन पर उन के प्राण संकीर्ण^[1] हो गये, और उन्हें विश्वास था कि अल्लाह के सिवा उन के लिये कोई शरणागार नहीं परन्तु उसी की ओर। फिर उन पर दया की, ताकि तौबा (क्षमा याचना) कर लें। वास्तव में अल्लाह अति क्षमाशील दयावान् है।

119. हे ईमान वालो! अल्लाह से डरो तथा सच्चों के साथ हो जाओ।
120. मदीना के वासियों तथा उन के आस पास के देहातियों के लिये उचित नहीं था कि अल्लाह के रसूल से पीछे रह जायें, और अपने प्राणों को आप के प्राण से प्रिय समझें। यह इस लिये कि उन्हें अल्लाह की राह में कोई प्यास और धकान तथा भक्त नहीं पहुँचती है, और न वह किसी ऐसे स्थान को रोंदते हैं जो काफिरों को अप्रिय हो, या किसी शत्रु से वह कोई सफलता प्राप्त नहीं करते हैं परन्तु उन के लिये एक सत्कर्म लिख दिया जाता है। वास्तव में अल्लाह सत्कर्मियों का फल व्यर्थ नहीं करता।
121. और वह (अल्लाह की राह में) थोड़ा या अधिक जो भी व्यय करते हैं, और कोई घाटी पार करते हैं तो उस को उन के लिये लिख दिया जाता है,

عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَجَبْتُ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنفُسُهُمْ وَظَاهِرًا أَن لَا مُلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ تُرْكَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَابُ الرَّجِيمُ^①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّمَا اللَّهُ يُنْهَا عَمَّا يَصِيقُ بِهِنَّ^②

مَا كَانَ لِأَهْلِ الْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ مِنَ الْأَغْرِبَاءِ أَنْ يَمْتَحِنُوْا عَنْ رَسُولِ اللَّهِ وَلَا يَرْغِبُوا بِآنْفُسِهِمْ عَنْ نَفْسِهِ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ضَمَارٌ وَلَا نَصْبٌ وَلَا غَنَصَةٌ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَطْهُونَ مُوْطَنًا يَغْيِظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنْتَلِوْنَ مِنْ عَدْوِنَا شَيْئًا لَا كُثُبَ لَهُمْ بِهِ عَمَلٌ صَالِحٌ إِنَّ اللَّهَ لَا يُفْسِدُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ^③

وَلَا يُنْقُضُنَّ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًّا لَا كُثُبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ اللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ^④

1 क्यों कि उन का सामाजिक बहिष्कार कर दिया गया था।

ताकि वह उन्हें उस से उत्तम प्रतिफल प्रदान करे जो वह कर रहे थे।

122. ईमान वालों के लिये उचित नहीं कि सब एक साथ निकल पड़ें। तो क्यों नहीं प्रत्येक समुदाय से एक गिरोह निकलता, ताकि धर्म में बोध ग्रहण करे। और ताकि अपनी जाति को सावधान करे, जब उन की ओर वापिस आये, संभवतः वह (कुकर्मा से) बचें।^[1]
123. हे ईमान वालो! अपने आस-पास के काफिरों से युद्ध करो^[2], और चाहिये कि वह तुम में कूटिलता पायें, तथा विद्वास रखो कि अल्लाह आज्ञाकारियों के साथ है।
124. और जब (कुर्�आन की) कोई आयत उतारी जाती है तो इन (द्विधावादियों में) से कुछ कहते हैं कि तुम में से किस का ईमान (विद्वास) इस ने अधिक किया?^[3] तो वास्तव में जो ईमान रखते हैं उन का विद्वास अवश्य अधिक कर दिया, और वह इस पर प्रसन्न हो रहे हैं।

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُونَ لَيَتَنَزَّلُوا كَافَةً فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَلَبَةٌ لِّتَتَفَقَّهُوا فِي الْدِينِ وَلَيُنَذِّرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْدَرُونَ^⑥

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قَاتِلُوا الَّذِينَ يَلُونَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلَا يُجْدِعُوا فِيمُكُمْ غُلْظَةً وَأَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ^⑦

وَإِذَا مَا نُزِّلَتْ سُورَةٌ فِيهِمْ مَنْ يَقُولُ أَيْكُمْ زَادَهُ هُنَّا بِإِيمَانٍ فَإِنَّمَا الَّذِينَ آمَنُوا فَرَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَهُمْ يُسْبَّبُثُرُونَ^⑧

1 इस आयत में यह संकेत है कि धार्मिक शिक्षा की एक साधारण व्यवस्था होनी चाहिये। और यह नहीं हो सकता कि सब धार्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिये निकल पड़ें। इस के लिये प्रत्येक समुदाय से कुछ लोग जा कर धर्म की शिक्षा ग्रहण करें। फिर दूसरों को धर्म की बातें बतायें।

कुर्�आन के इसी संकेत ने मुसलमानों में शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी भावना उत्पन्न कर दी कि एक शताब्दी के भीतर उन्होंने शिक्षा ग्रहण करने की ऐसी व्यवस्था बना दी जिस का उदाहरण संसार के इतिहास में नहीं मिलता।

2 जो शत्रु इस्लामी केन्द्र के समीप के क्षेत्रों में हों पहले उन से अपनी रक्षा करो।

3 अर्थात् उपहास करते हैं।

125. परन्तु जिन के दिलों में (द्विधा) का रोग है तो उस ने उन की गंन्दगी और अधिक बढ़ा दी। और वह काफिर रहते हुये ही मर गये।
126. क्या वह नहीं देखते कि उन की परीक्षा प्रत्येक वर्ष एक बार अथवा दो बार ली जाती^[1] है? फिर भी वह तौबा (क्षमा याचना) नहीं करते, और न शिक्षा ग्रहण करते हैं।
127. और जब कोई सूरह उतारी जाये, तो वह एक दूसरे की ओर देखते हैं कि तुम्हें कोई देख तो नहीं रहा है? फिर मुँह फेर कर चल देते हैं। अल्लाह ने उन के दिलों को (ईमान से) ^[2] फेर दिया है। इस कारण कि वह समझ बूझ नहीं रखते।
128. (हे ईमान वालो!) तुम्हारे पास तुम्हीं में से अल्लाह का एक रसूल आ गया है। उस को वह बात भारी लगती है जिस से तुम्हें दुख हो। वह तुम्हारी सफलता की लालसा रखते हैं। और ईमान वालों के लिये करुणामय दयावान् हैं।
129. (हे नबी!) फिर भी यदि वह आप से मुँह फेरते हों तो उन से कह दो कि मेरे लिये अल्लाह (का सहारा) बस है। उस के अतिरिक्त कोई हकीकी पूज्य नहीं। और वही महा सिंहासन का मालिक (स्वामी) है।

وَأَمَّا الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ فَزَادَ تَهْمُرُ جُنُسًا إِلَى رَجْبِهِمْ وَمَا تُوا وَهُمْ كُفَّارُونَ ⑩

أَوْ لَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْسَدُونَ فِي كُلِّ عَالَمٍ مَرَضٌ أَوْ مَرَثَةٌ كُلُّمَا يَتُوبُونَ وَلَا مُمْ يَدْكُرُونَ ⑪

وَإِذَا مَا أَنْزَلْتُ سُورَةً لَظَرَبَ عَصْمَهُمْ إِلَى بَعْضٍ هَلْ يَرَكُمْ مِنْ أَحَدٍ ثُمَّ اتَّصَرَفُوا صَرَفَ اللَّهُ قُلُوبُهُمْ يَا أَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ⑫

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ وَمَا عَنِّيْمُ حَرِيصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ⑬

فَلَنْ تَوْلُوا فَقْلُ حَسِيْبِ اللَّهِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكِّلُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْلُو ⑭

1 अर्थात् उन पर आपदा आती है तथा अपमानित किये जाते हैं। (इब्ने कसीर)

2 इस से अभिप्राय मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है।